नूपुर - 2018

स्वामी नित्यात्मानन्द जी महाराज के
125वें जन्मोत्सव पर
स्मारिका-रूप में कतिपय 'नूपुर'

श्री रामकृष्ण श्री म प्रकाशन ट्रस्ट
(श्री म ट्रस्ट)

कार्यालय : 579, सैक्टर 18-बी, चण्डीगढ़ 160 018
फोन 0172-2724460

मन्दिर : श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत पीठ (श्री पीठ)
सैक्टर 19-डी, चण्डीगढ़ 160019

website : http://www.kathamrita.org
email : srimatrust@yahoo.com

© श्री म ट्रस्ट
जून, 2018

सम्पादन : डॉ० (श्रीमती) निर्मल मित्तल
डॉ० नौबतराम भारद्वाज
सन्दीप नांगिया

प्रकाशन : अध्यक्ष
श्री रामकृष्ण श्री म प्रकाशन ट्रस्ट (श्री म ट्रस्ट)
579, सैक्टर 18-बी, चण्डीगढ़ 160 018
फोन - 0172-2724460

मुद्रण : प्रिण्ट लैण्ड, कश्मीरी गेट,
देहली - 110006

आवरण : चित्र : सिद्धार्थ महिम बंसल
: अर्णव माथुर
: सतीश कुमार वर्मा
फोटो एडिटिंग : प्रदीप दासगुप्त

समर्पण

कथामृतकार श्री 'म' की सेवक-सन्तान
स्वामी नित्यात्मानन्द जी महाराज को
जो
श्री म दर्शन-ग्रन्थमाला के माध्यम से
श्रीरामकृष्ण-कथा को,
कथामृत में कही-अनकही ठाकुर-वाणी को
हम तक लाए।

'नूपुर' नाम क्यों?

ठाकुर दक्षिणेश्वर में नरेन्द्र, भवनाथ आदि भक्तों के संग में हैं। ठाकुर गाना गा रहे हैं—

बोल रे श्रीदुर्गा नाम।
(ओरे आमार आमार आमार मन रे)।
...
यदि बोलो छाड़ो-छाड़ो मा, आमि ना छाड़िबो।
बाजन **नूपुर** होये मा तोर चरणे बाजिबो॥*

दीदी जी (श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता) कहा करतीं कि ठाकुर-वाणी का अक्षर-अक्षर है 'नूपुर'। इन 'नूपुरों' की झंकार से सब पाठक ठाकुर का शुद्ध प्यार पाएँ, इस अभिलाषा से ही उन्होंने अपने गुरु महाराज के 101वें जन्म-दिन पर सन् 1994 में स्मारिका-रूप में वार्षिक पत्रिका का प्रारम्भ '**नूपुर**' नाम से किया था। उनका विश्वास था कि ठाकुर-वाणी के पठन-श्रवण-मनन और पालन से व्यक्ति स्वयं बन जाता है माँ के चरणों का 'नूपुर'।

---

* ओ मेरे मन, तू दुर्गा-दुर्गा नाम बोल। ... यदि कहो छोड़, छोड़, किन्तु मैं नहीं छोड़ूँगा। हे माँ, मैं तेरे चरणों का **नूपुर** बनकर बजूँगा।]

— कथामृत भाग II, सप्तदश खण्ड, द्वितीय परिच्छेद,
19-09-1884

अनुक्रमणिका

निवेदन ... 7

प्रथम भाग

A Brief History and Activities of Sri Ma Trust ... 9

द्वितीय भाग

- श्री म दर्शन से कुछ उद्धरण ... 57
  - ठाकुर की बात ... 58
  - माँ की बातें माँ के ही मुख से ... 65
  - स्वामी विवेकानन्द विषयक बातें ... 69
- भविष्य-द्रष्टा स्वामी विवेकानन्द ... 71
- श्रीमती प्रवेश बजाज के साथ कुछ संस्मरण ... 79
- श्री 'म' महोत्सव-2017 ... 85

श्री 'म' ट्रस्ट

श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत के प्रणेता श्री महेन्द्रनाथ गुप्त, बाद में मास्टर महाशय वा श्री 'म' (M.) के नाम से विख्यात हुए।

इन्हीं श्री म के अन्तरंग शिष्य थे स्वामी नित्यात्मानन्द जो 'श्री म दर्शन' ग्रन्थमाला के प्रणेता हैं। और वे ही हैं श्रीरामकृष्ण श्री म प्रकाशन ट्रस्ट (श्री म ट्रस्ट) के संस्थापक।

अपने जीवन में ठाकुर-वाणी का पालन व प्रचार-प्रसार करने वाले श्री 'म' के पास दीर्घकाल तक रहकर स्वामी नित्यात्मानन्द जी को विश्वास हो गया था कि जगत् के सकल काम-काज करते हुए भी मन से ईश्वर के साथ रहा जा सकता है और यही है शाश्वत शान्ति तथा परमानन्द का सहज, सरल उपाय। परमानन्द की प्राप्ति ही है मनुष्य-जीवन का एकमात्र उद्देश्य। इसी परमानन्द की प्राप्ति जन-जन को हो, इस उद्देश्य से स्वामी नित्यात्मानन्द जी महाराज ने अपने प्रथम गुरु श्री 'म' की स्मृति में 12 दिसम्बर सन् 1967 को श्री 'म' ट्रस्ट (श्रीरामकृष्ण श्री 'म' प्रकाशन ट्रस्ट) को रोहतक में रजिस्टर करा दिया था जो बाद में चण्डीगढ़ ले आया गया। तब से लेकर आज तक ठाकुर-कृपा से ठाकुर-वाणी के प्रचार-प्रसार का कार्य निरन्तर चल रहा है और आगे बढ़ रहा है।

श्री 'म' ट्रस्ट से जुड़े ठाकुर-भक्तों/सेवकों पर ठाकुर इसी तरह अपना शुद्ध प्यार बनाए रखें, यही उनके श्री चरणों में प्रार्थना है।

— अध्यक्ष, श्री 'म' ट्रस्ट

निवेदन

12 दिसम्बर, सन् 1967 में श्री म ट्रस्ट की स्थापना होकर वर्ष 2017 में इसके 50 वर्ष पूरा होने पर श्री म ट्रस्ट के सदस्यों द्वारा निर्णय लिया गया कि श्री म ट्रस्ट का संक्षिप्त परिचय, इसका इतिहास एवं इसकी गतिविधियों पर अलग से एक पुस्तिका प्रकाशित की जाए— हिन्दी में और उसका अंग्रेज़ी-अनुवाद वर्ष 2018 के नूपुर में दे दिया जाए पाठकों की जानकारी/जिज्ञासा-लाभ हेतु। अत: इस बार के नूपुर के प्रथम भाग में इसे दिया जा रहा है।

दूसरे भाग में हैं नूपुर में प्रतिवर्ष की भान्ति प्रकाशित होने वाली अन्य रचनाएँ।

श्री म ट्रस्ट के संस्थापक स्वामी नित्यात्मानन्द के 101वें जन्मदिवस पर सन् 1994 में ट्रस्ट की तत्कालीन (द्वितीय) प्रधान श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता के मन में आया कि स्वामी नित्यात्मानन्द-रचित अद्‌भुत ग्रन्थ 'श्री म दर्शन'— 16 भाग का आद्योपान्त अध्ययन व्यक्ति द्वारा सम्भव हो, न हो, अत: इस ग्रन्थावली में वर्णित ठाकुर, माँ सारदा, स्वामी विवेकानन्द आदि की वाणी, इनकी वाणी की स्वयं कथामृतकार श्री म द्वारा व्याख्या तथा उन द्वारा व्याख्यायित अन्य विषय थोड़ा-थोड़ा करके प्रतिवर्ष 'नूपुर' में दे दिए जाएँ। 'नूपुर' पत्रिका के माध्यम से ये बातें, ये शब्द जन-जन के हृदय तक पहुँचें और संसार-ताप से तप्त उनके मन-प्राण तनिक शीतल हो सकें, उन्हें सान्त्वना मिले और भरोसा भी।

इसी शुद्ध कामना के साथ प्रस्तुत है इस वर्ष का नूपुर!

श्री श्रीरामकृष्णार्पणमस्तु!!

—डॉ० (श्रीमती) निर्मल मित्तल

Shri Narayan Guru (1856–1928) was a great saint and social reformer of Kerala (He had never heard of Shri Ramakrishana).

A century ago, a senior monk of Ramakrishna Order once showed him a photograph of Shri Ramakrishna and asked him : "What do you think of this person?"

After looking at the picture intently for a minute or two, the Guru replied : "If Brahman be given a form, it would be like this."

He then asked the Swami whose picture it was and was immensely pleased when he was informed that it was the picture of the Guru of Swami Vivekananda.

— The Light of the Modern World,
by Swami Bhajanananda, page 42)

प्रथम भाग

A Brief History & Activities of Sri Ma Trust

The annual Board meeting of the Trustees held on 17.11.2016 resolved to publish a brief history of Sri Ma Trust in Hindi on the completion of its 50 years of inception; and its English version to be included in Noopur, 2018. Present endeavour is the result of this decision. This will also satisfy the inquisitiveness of the devotees regarding their queries about the origin of this Trust and its activities.

The Trust formally came into being on December 12, 1967 when it was duly registered at Rohtak as a charitable and philanthropic organization. An office was set up on December 20, 1967 at the official residence of Prof. Dharm Pal Gupta, the then Principal of Government P.G. College, Rohtak. The founder President, Swami Nityatmananda and six others, including a Permanent Secretary and a Managing Secretary constituted the Trust. Below are given some important extracts of the Deed.

Aims and Objectives :

(a) To help needy persons, irrespective of any caste or nationality, either with cash or in kind who desire to practice in life and propagate Indian Culture.

(b) To raise memorials to persons of dignity and renown by constructing and running ashramas and kutirs at any place in Uttrakhand and elsewhere so as to enable

persons of any caste and nationality to live according to and study the Indian Culture and celebrate the life of great men.

(c) To start and manage centres, institutions, societies, schools, libraries and reading-rooms for the physical, intellectual and spiritual uplift of humanity.

(d) To arrange and organize meetings, seminars, gatherings, preaching tours and other cultural programmes, discussions on the nation by great personalities and publish books and to use any other educative and educational device.

(e) To establish any institution which may be beneficial and helpful to regenerate and uplift India spiritually and culturally for the realization of SELF, and obtaining eternal peace and happiness, irrespective of caste or nationality in the midst of normal occupations of life and helping all by advice, money and otherwise.

(f) To educate public opinion for improving social conduct and dealings with other human-beings, by imparting education of fundamental principles of good living.

(g) To form public opinion for following truthful and righteous path.

(h) To arrange for medical and other relief for the poor and the needy.

The Main Objective :

The Trust is to concentrate mainly on educating the householders on how to live so as to obtain eternal peace and happiness in the midst of normal occupation by practicing the great maxim : God first, world next.

The Inspiration

The spread of recent God-incarnation of the present age Paramahansa Ramakrishna Dev's consciousness rests primarily on two pillars. One is the world-renowned Swami Vivekananda who personified Sri Sri Thakur's dictum of 'Jeeva-Shiva' (serve humans as the Lord) and established a premier organization of monks dedicated to the realization of 'Jeeva-Shiva'; the other is the householder sannayasi, M., the ideal man of knowledge and austerities, and the celebrated Vyāsa-like writer of the Veda-like 'Gospel of Sri Ramakrishna'. The origin of this Trust owes its lineage to the latter.

It must be a part of the Divine Scheme that both the above mentioned 'pillars' were born in the same Mohalla of Kolkata— in the Shivanaarayan Das lane of Shimulia Palli. The great Swami Vivekananda was commissioned by the Master himself to carry his message abroad; the Commission given to Sri M. was to live and preach the Master's message at home— a mission that he fulfilled for fifty long years. But for his preaching, India would have known little of Ramakrishna as he was. Shri M. lived the life of an ideal householder as taught by the Master and enjoyed maximum peace and happiness. In the words of Christopher Isherwood : 'M. embodies Ramakrishna's ideal of the householder devotee.' M. had not only an unequalled love for the Master, but also a deep and experiential knowledge of the Master's teachings.

In these restless times what could give light to the troubled humanity more than the message of Sri Ramakrishna as embodied in the life of this great householder devotee, Sri M. It was mainly to spread this message that this Trust was created.

The Origin of 'Sri Ma Darshan'

In the preface to the 15th part of 'M.- The Apostle & the Evangelist'* (Page 14, 15) Swami Nityatmananda writes :

''Since my early youth, impelled by a mysterious power, I was inspired to record the nectar-like words of M. in the form of a daily diary which was to blossom into 'Sri Ma Darshan.' In the later youth, the inspiration to write out the whole work, giving the diary the ornamentation of a literary form came to me at

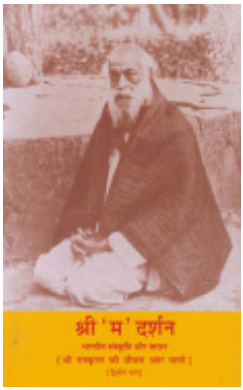

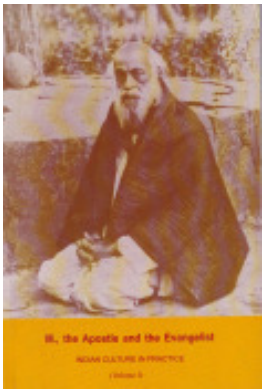

Rishikesh, on the banks of the Ganges, in the Himalayas. It took some twenty years of the life of this ascetic living on holy alms to mould the dairy into Sri Ma Darshan after undergoing great labour in collecting reference books from place to place and visiting the libraries of different universities. I was then not keeping good health. However, the time to prepare the press copy arrived. Besides writing the diary, I had to write more or less ten thousand pages to put it in literary form and prepare the manuscript.''

''The writing of this work started in early forties. The first part of Sri Ma Darshan was published in 1960, twenty-three years after it was written out. When the first part had been written, I requested many devotees, friends and educated persons to get it published but nobody agreed to take up the responsibility. I would implore

* Name of Sri Ma Darshan in English

anybody I met to get it published. My keenness had, as if, taken the form of a disease— like Sri Ramakrsihna's description of the state of a ghost looking for his companion.

●

Printing/Publishing of Sri 'Ma' Darshan

"To get [next] Sri Ma Darshan published when nobody was coming forward and my time was passing in acute anxiety, I came across a publisher by Thakur's grace. That publisher was as eager to print this work as I was for a 'companion'."

'The events occurred in this fashion. Srimati Ishwar Devi Gupta, having been attacked by a serious disease, was lying in the Medical College Hospital at Amritsar in a critical condition. The most famous doctors had given up all hopes of her recovery. In this state one day at night, Sri Thakur appeared to her in a dream taking up the form of the Child-Krishna. ....

.... She felt in her heart that her life would be saved. .... She expressed to the Lord internally her greatful resolve that she would devote the rest of her life only in His service, He who had saved her, by His grace, from the jaws of imminent death. This incident occurred in early January in 1960.'*

Smt. Gupta returned to her residence but was still half-dead. ….Her only thought was how to devote her mind and body in the service of Thakur. During these days Swami Nityatmananda came once to see Smt. Gupta at her house. He read to her some words of Thakur in Hindi while translating from the Bengali manuscript of Sri Ma Darshan he had with him. After listening to these divine words she asked if it had been published. Swamiji replied, "Yes, the first part entitled 'Sri Ma Darshan' has been published and the manuscript for the 2nd is with me." She requested him to give the manuscript to her adding that she would get it published. Swamiji

---

* M. the Apostle and the Evangelist Vol. 15, 2017, p. 15-16

told her that it was in Bengali. Still she persisted saying, "I shall learn Bengali." Swamiji then kept the manuscript with her and left.

The result of this beginning is manifest in the publication of the fifteen volumes of Sri Ma Darshan.

After learning Bengali by her own efforts in two months Smt. Gupta had started translating Bengali Sri Ma Darshan in Hindi and later from its Hindi translation her husband Prof. Dharm Pal Gupta, initiated by Swami Nityatmananda, started translating Sri Ma Darshan into English. The English version was given the title 'M., the Apostle and the Evangelist'. Smt. Gupta also took up the responsibility of publishing Sri Ma Darshan in all the three languages— Bengali, Hindi and English.

In the words of Swami Nityatmananda "….I offer a thousand salutations with gratitude at her [Smt. Gupta's] feet. I also express my gratitude to Principal Dharm Pal Gupta. During the last twelve years, his residence has been my home and the centre of service. I am indebted to him for his high mindedness.

"...Another devotee-friend must find a special mention here. He is Suresh Chandra Das. From reading the press proof of the Bengali Sri Ma Darshan to the various jobs connected with the embellishment of the book for all this labour I am grateful to him too."[1]

In bringing out all the parts of Sri Ma Darshan in Hindi Dr. Naubat Ram had always been assisting Smt. Gupta.

All the 16 parts of Bengali and Hindi Sri Ma Darshan had been published during the life time of Smt. Gupta. Now the work of their re-prints are in progress Bangla volums are being taken care of by Sh. Aashish Gupta and his wife Smt. Anuradha ji. Work in Hindi at present is being undertaken by Dr. Naubat Ram

1 M. the Apostle and the Evangelist, 2017 page 20.

Bhardwaj[1] and Dr. (Mrs.) Nirmal Mittal.

Sh. Vinay Mehta, Sh. Nitin Nanda, Sh. Sandeep Nangia and a few other bhaktas had been assisting Prof. Dharm Pal Gupta in bringing out English Sri Ma Darshan. All the 16 parts were translated out of which eight parts were published during the life time of Prof. Dharm Pal Gupta. The work of fourteenth and sixteenth parts is being taken care of by Sh. Nitin Nanda and Sh. Sandeep Nangia. The rest have been published after him.

The immediate projects at the time of the Trust's inception were[2] :

(1) To publish, 'Sri Ma Darshan' by Swami Nityatmananda in 15 volumes[3] in Bangali and its Hindi and English renderings. (It may be noted that the Part I to V in Bangali and Part I in Hindi had already been published by that point of time.)

(2) To start and run a library for the benefit of all.

(3) To procure a suitable land for the Trust.

(4) To construct a building thereon for the permanent location of the Trust.

By Thakur's grace, all these four requirements have been fulfilled.

In addition to Sri Ma Darshan the literal word-by-word Hindi and English version of the **Bangla Kathamrita** was brought out by the Trust in five parts as per the original one under the same title : **'Sri Sri Ramakrsihana Kathamrita'** during 1986-88 and 2001-2011 respectively. The 2nd editions of the Hindi Kathamrita appeared subsequently during 1998-2011.

Besides, a treasure house of the thoughts of some prominent

---

1 Earlier Sh. Ishwar Chandra was assisting Dr. (Mrs) Nirmal Mittal in this work.

2 As per donation appeal of the Secretary of the Trust, 1971.

3 Its 16th part also came to light in 1977.

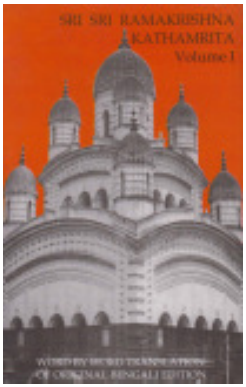

eminent writers was brought out in 1982 under the title **'Sri Sri Ramakrishna Kathamrita Centenary Memorial'**. **'A short life of M.'** appeared in 1977. A unique record of the life and work of

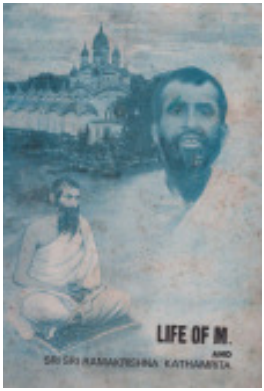

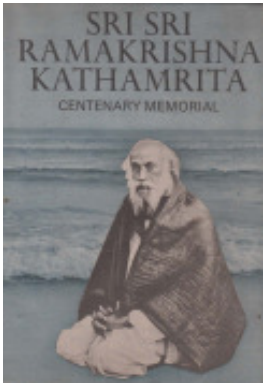

M. was published in 1988 under the title **'Life of M. and Sri Sri Ramakrishna Kathamrita'**. Revised reprints have also come up as per the demand.

(2) A Library-cum-reading room was set up with an initial donation of 14 books by Prof. Dharm Pal Gupta and 17 by Smt. Basanti Devi Amrit Lal of Jalandhar. On 31st March, 1969 we had 66 books in the Library. It was decided to enlarge the stock and scope of the Library. Consequently books and magazines were added and procured in subsequent years. The

Library has more than 2000 books as of this day, the 31st December, 2017.

(3) The Chandigarh Administration allotted plot No. 248 measuring 2000 square yards, in Sector 19-D, on a 99 years' renewable lease basis in 1974.

(4) Rev. Swamiji Maharaj sanctified the allotted land by the holy dust of his feet on June 6, 1975. (He left his corporal frame on July 12, 1975.) A building comprising of a shrine-cum-meditation hall was constructed thereon during 1976-77. On the auspicious day of Raam Navami, April 19, 1978. The premises were consecrated to Sri Sri Thakur-Ma by Swami Tattvajnananda ji, the then Incharge of Swami Vivekananda Students' Home at Ramakrsihna Mission Ashrama, Chandigarh. So the regular Pooja started on that day at 9.30 a.m.

Consequent upon the retirement of Prof. Dharm Pal Gupta as Principal, P.G. Govt. College, Rohtak and Director, Panjab University Centre for Post-Graduate Studies on the 31st of August, 1968; the office of the Trust was shifted to the present premises of his permanent residence at 579, Sector 18-B, Chandigarh, w.e.f. 1st of September, 1968; and since then it has been functioning from here till date.

●

Some Important Personalities :

It would be pertinent to give here a brief account of life of the following four personalities who have been the insipiration and instrumental in the origin and development of this Trust.

(a) Shri M.

(b) Swami Nityatmandanda

(c) Smt. Iswhar Devi Gupta

(d) Prof. Dharm Pal Gupta

Shri M.

Sh. 'M.' or Sh. Mahendra Nath Gupta or Master Mahashay about whom Shri Ramakrishna himself said, '.....you belong to the ever perfected class.... You are my own, of the same substance as father and son... you belong to my inner circle. You are one of those who trade in the jewellery of the spirit. Maa, illuminate him, otherwise how will he illuminate others? ....Except me, he knows nothing…. Maa, you have endowed him only with one kala of shakti! O, I see this will suffice to carry out your mission.'*

As commissioned by the Master, Thakur Shri Ramakrishna, M. preserved for posterity his Master's Word and his day-to-day activity in the form of a diary whose 'exactitude is almost stenographic', to quote Romain Rolland, in his world renowned book, 'Sri Sri Ramakrishna Kathamrita'.

'M.', was one of the first disciples of Shri Ramakrishna to realize his Master's fundamental teaching : The aim of life is to see God; and God first, all else afterwards. M. was ordained and earmarked for his great work of teaching humanity how to live the life of joy and peace while living in the household.

In obedience to his Master's command, Shri M. lived in the house-hold, like 'the maid in a rich man's house— that is, to do all necessary work but keep the mind fixed on God. Like the maid

* Sri Sri Ramakrishna Kathamrita, Part-I,

does all work in her master's house but her mind is always in her village home and she is content with whatever her master gives her. She brings up her master's children like her own, calls them 'My Raam, My Hari!' but in her mind she knows well that none is hers own.

M. lived outwardly as a householder, but lived inwardly all absorbed in the Divinity of his guru— Sri Ramakrishna. The devotee has two personalities— the one, the worldly man and the other, the illumined man of God. When the man of the world falls into various whirlpools of pleasure and pain and starts getting drowned; his Divine counterpart— the illumined one gets awakened and transforms the drowning weakling into a mighty hero.

It is evident that M. came only to write, publish and propagate 'Sri Sri Ramakrsihna Kathamrita'. The day the last proofs of the book were given print order, he left this world singing like a swan, 'Master, O Holy Mother, take me in your lap,' on June 4, 1932 A.D. Twenty one days before this day of his final journey, he had started chanting the death-conquering victory song of Durga :

> I have surrendered my life at the feet of the Fearless One, what fear do I have of yama (the god of death)?

Swami Nityatmananda

Swami Nityatmananda, the founder of Sri Ma Trust, was very fortunate to live with Shri M. from his rising youth. Born in a village, Kathiadi, distt. Mymensing, in East Bengal (now, in Bangladesh) on the auspicious Ganga Dashahara day in 1893, his parental name was Jagat Bandhu Roy. Later, he came to be called 'Jagabandhu' as a student in Calcutta, he was soon attracted by the great intellectual and spiritual personality of Shri M., the famous Rector of the Morton School, Calcutta. Under his guidance and inspiration Jagabandhu Roy studied for his B.L. degree of the Calcutta University and joined the Belur Math as an initiate for his

spiritual regeneration. Soon the second President of the Math and mission and a direct disciple of Shri Ramakrishna Paramahansa, Swami Shivanandaji (Mahapurush Maharaj) gave him the gerua, admitting him to the great Order as a Sannyasi of Shri Ramakrishna.

Swami Nityatmananda had the rare privilege of sitting at his feet and associating himself with this spiritual giant for a number of years— from 1922 to 1932. M.'s long life was spent in propagating the message of Shri Ramakrishna by spiritual talks and publishing the Gospel of Sri Ramakrishna, emphasizing the life of tapasya for God-realization by all bhaktas, lay or monastic.

Swami Nityatmananda also recorded M.'s day-to-day spiritual talks in his diary, running into twenty-two notebooks, big and small. On several occasions these diary reports were read out to M. at his bidding. He not only encouraged him but also corrected the writings at places and suggested a better way of keeping notes. These talks have been embodied in Swami Nityatmananda's monumental work 'Sri Ma Darshan' in Bangali and Hindi and its English translation 'M., the Apostle and the Evangelist', in sixteen volumes.

He was Mantra-initiated by Shri Mahapurush Maharaj at Bhuvaneshwar on May 28, 1926; initiated into Brahmacharya on March 25, 1927 and named "Shrisha-Chaitanya; and was initiated into Sannyas on Swami Vivekananda's birthday on January 21, 1930 at the Belur Math and named Swami Nityatmananda. He was assigned looking after Swami Vivekananda's Room at the Belur Math. He served the Ramakrishna Math and Mission at

Calcutta, Madras and Deoghar Vidyapeeth.

All along he was worried about writing and publishing of Sri Ma Darshan. He resolved to serve Math and Mission till Shri Ramakrishna's last direct disciple's presidentship. After the passing away of Shri Mahapurush Maharaj in 1934; of Swami Akhandanandaji (Gangadhar Maharaj) in 1937 and Swami Vijnanandaji (Hari Prasanna Maharaj) in 1938; he came over to Rishikesh and ever since 1939 led a life of a wandering monk living on holy alms. He recalls :

'Living in a thatched cottage on the bank of the river Ganges at Uttarakhanda in the Himalayas, satisfying his hunger with the bread of charity, calling on the Lord with a heart full of yearning in a secret nook, my revered Master, Sri M. inspired deep longing and constant encouragement in the minds of sincere spiritual aspirants. This great and everlasting ideal of India had embodied itself in the life of Sri M., as well as the sannyasin children of Sri Ramakrishna.'

'After the demise of Sri M., when happy moments appeared in my life, and by his grace, I found joy and peace never tasted before in the life of holy begging in Rishikesh. I began to read through the diaries, a collection of the immortal words of the Master M., which had been preserved in a bundle for a long time, like the treasure of Yaksha. They appeared to be more precious, sweeter, and were a great source of solace for me. I began to copy them into notebooks in a well-arranged form.'*

Thus the Manuscript got ready for publication in the spring of 1943. Then started the search for a publisher, for whom Swami Nityatmananda had prayed : "….the responsibility of publishing and propagating this great work will have to be borne by you yourself. By inspiring the heart of one of your own, may you get it published for the good of the devotees."[1]

* M. the Apostle and the Evangelist Vol. I, 2013, p. 1

And the publisher was found in Smt. Ishwar Devi Gupta who saw Swami Nityatmanandaji along with her husband, Prof. Dharm Pal Gupta, for the first time on the auspicious birthday of the Holy Mother in 1958 in Tanda Urmar of Hoshiarpur District in Punjab, at the residence of Sh. V.P. Prabhakar, the then S.D.O. (PWD). Swami Nityatmanandaji wrote about the end of his desperate search for a publisher of Sri Ma Darshan thus in 1960 as mentioned earlier.

For the remaining part of his life, he operated from the present premises of the Trust at Chandigarh, frequently visiting his outstation bhaktas and staying invariably at Rishikesh for about three months in a year. He wrote in 1973 : 'Before I conclude, I also express my gratitude to Principal Dharm Pal Gupta. During the last twelve years, his residence has been my home and the centre of service. I am indebted to him for his high mindedness.'[2]

He left this world on the 15th of July, 1975 at Chandigarh.

Smt. Ishwar Devi Gupta

The foremost disciple of Swami Nityatmananda, Smt. Ishwar Devi Gupta, was instrumental in spreading the word of Shri M. and founding the Trust. She took up and accomplished the publication of Sri Ma Darshan in Bengali, Hindi and English. She discovered the central theme of Sri Ma Darshan— how to make it possible to live the divine life of joy and peace while living in the household as described in the Vedas. Inspired by this long cherished discovery, she learnt Bengali and at once began to translate it in Hindi as a prayerful offering to Thakur. This she did for her own sake as well as for the sake of her Hindi-knowing brothers and sisters. She also took the onerous task of getting these books and their English

1 *ibid* Vol. XV, 2017, p. 14.

2 M. the Apostle and the Evangelist Vol. 15, 2017, p. 20.

translations published.

Sh. Ashish Dasgupta, an earnest devotee and a Trustee, observes : "It was the earnest wish of Swami Nityatmanandaji Maharaj to propagate the teachings and thoughts of M. to every householder. He lived only to complete the writing and publishing Sri Ma Darshan in sixteen volumes (in Bengali), and left his mortal coil immediately thereafter. He prepared Smt. Ishwar Devi Gupta to do the rest — translation and publication of the book in Hindi and English. Being a housewife, discharging her usual responsibilities, one can visualize how many odds she had to face. She was determined to overcome all difficulties and committed to fulfill her Gurudev's wish — the publication of Sri Ma Darshan in Bengali, as well as translating and publishing the same in Hindi and English."

She guided whosoever came to her and made them 'her own' instantaneously. Her personal guidance, care and affection transformed the lives of innumerable people.

In a way, she led a life as exemplified by M. and not only carried his flame, but also passed it on to the next generation of sevaks and devotees. Though initiated into renunciation, she remained in the household and spread the word of Thakur for more than forty years.

Gitanjali, a Press Correspondent of "The Tribune" reported in the daily paper on August 19, 2001 after interviewing the then President of the Trust : "Ishwar Devi, who alongside took care of her children and household chores, says that those days she

packed 36 hours in a day. She, however, believes that she couldn't have achieved what she did without the loving support of her husband (she lost him in 1998) and children, who have achieved top positions in their respective fields.

"Now, even in her failing health, Ishwar Devi oversees the activities of the Sri Ma Trust, which include helping needy persons, arranging seminars and educational tours, bringing out an annual booklet called *Nupur* on the birth anniversary of Swami Nityatmananda and supervising *satsangs* and celebrations at Sri Sri Ramakrishna Kathamrita Peeth, a temple dedicated to Ramakrishna in Sector 19, Chandigarh."

"By serving God in the role allotted to her— that of a householder— this octogenarian has paid a befitting tribute to her spiritual masters, who professed that one could serve and reach Him without living the life of a hermit in a forest. She has truly lived up to the teachings of Ramakrishna, whose advice to householders was: Let the boat be in water, but let there be no water in the boat; let an aspirant live in the world, but let there be no worldliness in him."

Reverentially known as Didi, Mummy, Mataji, Bahanji etc. among the devotees, Smt. Ishwar Devi Gupta left her body on the Buddha Purnima day, the 26th of May, 2002 at Chandigarh and remained the President of the Trust since 1975.

Prof. Dharm Pal Gupta

Prof. Dharm Pal Gupta, affectionately and reverentially known as 'Papaji' among the devotees, was the founder Managing Secretary of the Trust and an intimate disciple of Swami Nityatmananda. He received Mantra-initiation from Rev. Swamiji on November 30, 1963 at Rohtak.

He served the Trust for about 36 years in is multifarious

activities right from its inception. He can be called a 'Rasaddar' of the Trust. That is why an intimate devotee of Smt. Ishwar Devi Gupta and presently a Trustee writes about him : "Papaji was always calm and quiet, gentle and soft spoken. He was a deep thinking personality. He played a perfect supportive role with mind and money. He used all of his resources with earnest love, care and reverence for Swamiji and Mataji."[1]

He carried forward Shri M.'s flame though his lucid translation of all the five parts of 'Sri Sri Ramakrishna Kathamrita' and all the sixteen volumes of 'Sri Ma Darshan' in English. He authored some other books also, such as : "The life of M. and Sri Sri Ramakrishna Kathamrita' and 'A Short Life of M.' He edited the book 'Sri Ramakrsihan Kathamrita Centenary Memorial Volume'— a treatise well-known in India and abroad. It is because of his English versions of the Trust literature that the Trust is gaining popularity abroad day by day and the demand for 'M.- the Apostle and the Evangelist' and 'Sri Sri Ramakrishna Kathamrita' in English is on the increase.

In an interview given to Dr. Nirmal Mittal, he reveals about Swami Nityatmanandaji : "I took him as a great spiritual personality and tried my best to follow his great spiritual personality and tried my best to follow his great teachings knowing fully well my incompetence and his greatness. After all, Swamiji had transformed an almost agnostic into a person who has no other engagement in life than reading, dictating and hearing spiritual talks while still keeping his love of gardening and flowers alive."[2]

---

1 Noopur 2012, p. 75-76

2 Noopur 1997, p. 76

On his very first meeting with Swamiji in 1958, he observed : "Swamiji was not one of those monks one frequently comes across on the roads as even in a holy place. His words were chistled as of a seasoned literary person without the hotch potch of mysticism or intellectual arrogance. He asked us to take care of our spiritual life just as we were looking after our worldly and intellectual life.[1]

He left for Thakur's abode on the 23rd of October, 1998 at the residence of his only son, Dr. Kamal Gupta, at Noida.

●

Sri Ma Trust was created with the execution of a Trust Deed, registered at Rohtak on December 12, 1967 with the following constituents :

President- Swami Nityatmananda, Sri Ramakrishna Math, 38, Hardwar Road, Rishikesh. **Permanent Secretary-** Srimati Ishwar Devi Gupta, 579, Sector 18-B, Chandigarh. **Managing Secretary-** Prof. Dharm Pal Gupta, Retd. Principal and Director Post-Graduate Studies, 579, Sector 18-B, Chandigarh.
Other Trustees- Shri Dalip Kumar Sengupta, Staton Director, A.I.R., Lucknow. Shri Ved Prakash Prabhakar, Executive Engineer, Khaliar, Mandi. Dr. A.C. Bhattacharya, Professor of Philosophy, K.N. Govt. Post-graduate College, Gyanpur (Distt. Varanasi), Shri Suresh Chandra Das, Managing Director, M/s General Printers and Publishers (P) Ltd., 119, Dharamtala Street, Calcutta.

Thus keeping in view its motto— आगे ईश्वर परे सब— Sri Ma Trust proceeded with its main aim of educating householders on how to live a purposeful and happy life amidst the stresses and strains of the modern times by practicing 'God first, world next'.

An office was established on 20.12.1967 with the following

prayer written by Swami Nityatmanandaji in his own hand on the 1st page of the Visitors' Book of the Trust :

Om Thakur, our beloved Father! This day we open this centre named Sri Ramakrishna Sri Ma Prakashan Trust (Sri Ma Trust) to propagate your holy name to all people of the world in our humble way for the peace and happiness of all. Yourself, accompanied by the Holy Mother and your beloved disciples like Swami Vivekananda and revered 'M.', do bless us; be always with us; do guide us in the right direction.

By this unselfish work, by this labour of love, may we realize your real nature, God incarnate on earth!

May we have peace and happiness real; may all beings of the universe be peaceful and happy; may the entire universe be the abode of peace and happiness, real and eternal!

I am your humble son and servant,

Swami Nityatmananda
Civil Lines, Rohtak
December 20, 1967

Activities of the Trust

Educating Householders and Propagate Indian Culture

The Trust initially concentrated mainly on educating householders on how to live in the world so as to obtain eternal peace and happiness in the midst of normal occupation by practicing the great maxim: God First, world next. Five hundred copies of a brochure, containing *inter alia* an appeal for contributions and donations were got printed and sent out to

friends, well-wishers and bhaktas of Swamiji, by the Founder Secretary in 1971.

Distribution of Trust and other Literature

Swami Nityatmananda, the founder President donated (free of charge) 5 copies each of Sri Ma Darshan, Bengali Parts I to IV, 50 copies of Sri Ma Darshan, Hindi Part I and 50 copies of "M— the Apostle and the Evangelist" Part I for the propagation of Indian cultural heritage.

Later, the Trust procured copies of the above publications on payment, at a reasonable discount. By the end of the financial year 1968-69 the Trust had distributed some 835 copies of Sri Ma Darshan in Bengali, Hindi and English, necessitating procurement of more copies of these publications.

Beside the above publications, the Trust also distributed some copies of 'Sri Sri Ramakrishana Vachanamrita'* and of the life of the Holy Mother, in Hindi, the Gospel of Sri Ramakrishna in English and some copies of the short lives of Sri Ramakrishna and Swami Vivekananda in Hindi, published by Sri Ramakrishna Math and Mission, Nagpur.

Shifting of the Trust-Office

Consequent upon the retirement of Principal D.P. Gupta from Govt. service, the office of the Trust was shifted w.e.f. September 1, 1968 to the present premises, his permanent residence, at 579, Sector 18-B, Chandigarh till this day.

More Activities of the Trust :

The Trust-work was going on with the combined efforts of mainly Swamiji, Papaji and Mummy. For its smooth working, some

* Hindi translation of Sri Sri Ramakrishna Kathamrita in Bengali by the past Nirmalaji and published by Ramakrishna Math, Nagpur.

devotees were included in the Trust as and when it was so required. The name of Sh. N.R. Bharadwaj was included in the list of trustees in the vacancy caused by the resignation of Sh. V.P. Prabhakar in 1972.

New Centres Outside Chandigarh

In the years 1970-72, the Trust established autonomous sabhas in various parts of the country; at Lucknow, Mandi (Himachal), Bangalore, Amritsar, Delhi and Chandigarh. During these two years new centres were created at Solan and Shimla in Himachal Pradesh; at Sonipat, Panipat and Rohtak in Haryana; at Chhehrata and Ludhiana in Punjab and at some other important places like Grwalior, Gyanpur (Varanasi), Nainital, Jabalpur, Mhow, Rajgarh, Khurdah and Kolkata.

Regular Satsang, Pooja and Paath

At all these centres regular satsang was held on fixed days at a fixed time. Selected readings were conducted from the Kathamrita and Sri Ma Darshan along with Pooja, Aarati etc. at these satsangas. Important festivals were also celebrated. Paath from the Kathamrita and Sri Ma Darshan was held regularly at Dakshineshwar also when the President and the permanent Secretary visited this holy place in 1970. They reached Howrah by train at 9.40 a.m. on Novermber 1, 1970. They saw 61 spots of Thakur-Leela at Dakshineshwar on 08.11.1970. Sh. D.K. Sengupta, Sh. N.K. Bannerji, Smt. Nirmal Bannerji and their son Amit of 7 years (Baban by nick name) were also with them. The driver, Shankar by name, took them around the holy places.

While at Kolkata Swamiji and Mrs. I.D. Gupta also led a party of devotees on a pilgrimage to Holy Kamarpukur, Jairambati, Dakshinewshar, Belur Math, Kashipore Udyan, Udbodhan, Yogodyan, Kakurgachhi, Swami Vivekanand's birth place, Thakurbari, Morton School etc. These visits added to the visitors'

devotion at the feet of Thakur and the work done by the Trust.

On their way back Swamiji visitied Tapasya Kutir of Shri M. at Swargashram, Rishikesh along with many devotees. Dr. Naubat Ram Bhardwaj stayed with Swamiji at Rishikesh in order to render personal service to Swamiji who was seventy nine then.

Shri M. Tapasya Kutir

Sh. M.'s this visit to Rishikesh is recorded in 'M. The Apostle and the Evangelist' Part VII, 2002, page 256-257 in the following words :

I went to Kashi with the Holy Mother in 1912. From there I went alone to Haridwar and landed at the Kankhal Ashrama. After this I was in a hut on the bank of the Ganga. Hari Maharaj (Swami Turiyananda) and Tarak Maharaj (Swami Shivananda) were also there. *(Laughing)* One day we formed a Brahman-chakra with all in that cottage. Hari Maharaj used to take us all for a walk every evening from one Ashrama to the other. One day we happened to go to the Gurukul Kangri. Swami Shraddhanandaji had come to fetch us. He had been told that I was a teacher. So he consulted me in many matters. Moreover he made me record my remarks in the visitors' book.

"At last I went to Rishikesh, first in a brick built house in Mayakund near Ramayati sadhus. Next I was in a Swargashrama hut near the boundary wall— as one comes from Lakshman Jhula. It was a very small hut at the foot of the hills. Elephants used to come down from the forest to drink water on the other side of the wall. I was told that beasts were afraid of fire so I used to light a lantern and keep it outside the hut."

The Trust negotiated with the authorities of the Swargashrama for the renovation and preservation of the Tapasya Kutir of Shri M. where he carried out tapasya in 1912 now in a dilapidated state. This holy place was visited by the devotees of Shri

Ramakrishna from here and abroad.

The Trust took up the matter of renovation and preservation of this holy little Kutir with the authorities of Swargashrama. The Swargashrama Trust kindly acceded to the Trust's request, dismantled the old Kutir and laid its foundations de novo on exactly the same spot. Beyond this no further progress took place because of paucity of adequate funds.

Preaching Tours

With the aim to educate the householders how to remain in this world with a mind— God first, world next, the President Swami Nityatmanandaji and the Secretary Smt. Ishwar Devi Gupta visited a number of cities like Solan, Hoshiarpur, Delhi. At Delhi among other important and famous personalities like Mrs. Manmohini Sehgal, the great social worker and niece of the late Prime Minister Jawahar Lal Nehru also attended the satsangs.

Thanks to the preaching tours of the then President and his spiritual administration, his bhaktas and other friends contributed an amount of Rs.17,555.68 to the Trust during 1968-69. At most of the places visited by Swamiji, the Permanent Secretary accompanied him and assisted him in his work. Now the work of the Trust started being carried on by local friends and well wishers at Rohtak, Delhi, Lucknow, Mandi, Amritsar, Gwalior, Gyanpur (Varanasi) and Calcutta besides Chandigarh, the present Head Quarters of the Trust.

Camp Ashram at Solan in Summer 1970

The Trust organized for the first time a Summer Camp Ashram at Solan with the aim of training house-holders in small groups, to live the ideal enunciated by Shri Ramakrishana— living like a maid-servant in one's house— the life that Shri Ramakrishna made 'M.' to live. This was done by Swamiji to different batches of bhaktas who attended the Ashram at different periods.

The Ashrama worked from 23rd May, 1970 to 31st July 1970. Shri Naubat Ram Bharadwaj worked very ably as the manager of the Ashrama. The following rules were strictly observed in the camp Ashrama:

1. Regular meditation from 4.00 a.m. to 6.00 a.m.
2. The ashramites themselves to do all ashrama works—sweeping, cooking, cleaning of utensils and so on.
3. Women devotes to be served by men devotees, keeping in mind the Matri-puja and Shri-Sadhana of Shri Ramakrishna.
4. Simple sattvic food.
5. Compulsory attendance at the morning and afternoon classes and the evening aarati.

Some local residents also used to attend these sittings.

Subsequent Camp Ashrams

The Trust organized its second camp Asharam at Solan in 1971, with the devoted cooperation and under the able management of Sh. N.R. Bhardwaj. The same routine of morning japa and dhyaan, afternoon classes and paath of Sri Ma Darshan and the evening aarati, as was done in the summer of 1970, was followed.

In the year 1972 too Swami Nityatmanandji held summer camp at Solan as he did so in the two preceding years. As usual he was assisted by Prof. Dharm Pal Gupta, Smt. Ishwar Devi Gupta, Sh. Naubat Ram Bharadwaj, other friends and admirers. Swami Nityatmananda was all the time available for guidance to those who were behest with personal problems : mental, moral or spiritual, even worldly.

The fourth Camp Ashram was held in 1973. It was managed by Sh. D.P. Guptaji and a dedicated sevak Ram by name. They went to Solan on 27.04.1973 to set up the Ashrama in a building

taken on rent for four months. Rev. Maharaj went to Solan on 29.04.1973 from Chandigarh and lived there to conduct and supervise the Camp Ashrama till its end on 06.08.1973. He is seen off at the Sector 17 Bus Stand by Smt. Ishwar Devi Gupta, Smt. Kamla Mazumdar, Smt. Pravesh Bajaj and Brahmacharini Meera Puri joined the Camp on 04.05.1973. The devotees attended the camp in batches. Thus Sh. Dharm Pal Gupta, Smt. Ishwar Devi Gupta, Smt. Kamla Mazumdar, Smt. Pravesh Bajaj, Brahmacharini Meera Puri, Col. D.R. Bajaj, Sh. Rajeev Bajaj, all from Chandigarh; Dr. A.C. Bhattacharya from Varanasi, Mrs. Padma Gadi from Delhi, Dr. I. Sanghi from Bangalore, Mrs. Vijaya Prabhakar from Shimla and many other devotees were benefitted by the camp. Besides the comparison and correction work of the 3rd parts of Hindi Sri Ma Darshan and 'M.-The Apostle and the Evangelist' was done by Smt. Ishwar Devi Gupta and Sh. Dharm Pal Guptaji. Swami Aroopananda, a young Swamiji (earlier Brahmachari Amar Chaitanya) also visited the camp on 27.07.1973. The permanent Secretary delivered discourses in various spiritual and religious bodies at Solan to propagate the Trust, its aims and objectives and plans to the locals.

On 07.08.1973 the founder President and the permanent Secretary returned to Chandigarh in a taxi after winding up the camp.

Prachar Literature

The Trust did useful work in the matter of publishing, acquisition and distribution of Sri Ma Darshan and distribution of other literature conforming to Shri Ramakrishana— Swami Vivekananda, Shri M.'s teachings published by different ashramas and publishing houses.

Celebrations

The Trust celebrated the birthdays of Shri Ramakrsihna, the

Holy Mother, Shri M., Swami Vivekananda. The Durga Puja, X'mas and the Founder's Day (December 12) were also celebrated. Puja, Aarati, readings from the scriptures were done followed by the prasaad distribution.

Library and Reading Room

During 1970-72 some books on Tantra Literature, Lord Chaitanya, Upanishads, other philosophy books were donated by some bhaktas assocated with the Trust. Swami Chidbhavanandaji Maharaj of Shri Ramakrishna Tapovanam, Tirrupparaitturai gifted many copies of his valuable work on Bhagawad Gita— its many copies were distributed by the Trust— free of charge for propagation. In addition to these books a few titles published by Ramakrishna Mission and Math from different centres were also added and distributed among the bhaktas.

Land and Building for the Trust

Besides enlarging the scope of Library-cum-Reading Room it was proposed to procure more literature for distribution. The process of purchasing a suitable site for a Trust Building was initiated.

The Trust moved the Chandigarh Administration to allot it 4-6 Kanals of land at a nearby Sector of the present location of the Trust office in 579, Sector 18-B, on concessional rates. Col. D.R. Bajaj and other friends worked very hard in this connection.

The Trust made payments to the Chandigarh Administration for the plot of land acquired from them in Sector 19-D, Chandigarh. An outline plan of the proposed building was also made ready. Some funds for the proposed building were collected.

Though the office of the Trust continued to be located at the house of the Secretary, at 579, Sector 18-B, Chandigarh. The Trust built a block of rooms— a meditation room, a library-cum-reading room, a consultation room, the caretaker's room, a store, a Prasad room and a bathroom. This set of rooms had also been provided with a corrugated iron sheet verandah, about 13 ft. wide, running along the front of the building. The building was named— 'Sri Sri Ramakrishna Kathamrita Peeth'. Shri U.K. Batra, Architect Chandigarh prepared the plans of the Trust building and also supervised the first phase of construction in a selfless spirit. Sardar Malkiat Singh, the contractor assisted him.

It is worth mentioning here that the day the manuscript of the last volume of Sri Ma Darshan was posted to the General Printers and Publishers in Calcutta, Rev. Swami Nityatmanandaji had an attack of paralysis on the right side of his body in February, 1974. He remained handicapped till he left his body on July 12, 1975. Yet the bhaktas at Matajee's instructions arranged to take Swamiji at the allotted site of the Trust in Sector 19 and got it sanctified by the touch of the holy feet of Rev. Swamiji Maharaj on June 6, 1975. Matajee had prayed then : O Thakur-Ma, make your permanent abode here to live along with all your disciples and devotees.

Reports from centres in and outside Chandigarh

All centres in and outside Chandigarh started by Sri Ma Trust, Chandigarh used to send the reports of their activities to the Trust. These were mainly situated at the residence of Shri and Shrimati D.R. Bajaj, H.No. 37, Sector 11; Principal, H.C. Bhattacharya, Lucknow; Shri V.P. Prabhakar and Smt. Vijaya Prabhakar, Mandi;

later at Shimla, Dr. Inder Sanghi, Bangalore; Smt. Padma Gadi, New Delhi; Brahmacharini Dhanwanti, Shakurbasti, Rani Bagh, Delhi.

Publication and Distribution of 'Sri Ma Darshan'

15 volumes of Shri Ma Darshan in Bengali, first two volumes in Hindi translated by Smt. Ishwar Devi Gupta, its English version— 'M. the Apostle and the Evangelist' translated by Prof. Dharm Pal Gupta from the Hindi version had been published and distributed.

Classes for Housewives

The Trust also held classes for the benefit of house-wives, with a view to emphasie her role as mother, wife, sister and friend in the full knowledge that she is a child of God— अमृतस्य पुत्रः and practicing the adage of the Trust— आगे ईश्वर, परे सब; God first, world next, so that she can lead a life of contentment and happiness even while living in the household.

Swami Nityatmananda leaves his mortal frame

For about last two years Swami Nityatmanandaji remained sick. His health began to fall and ultimately he left his mortal frame on July 12, 1975. After his demise the whole responsibility fell on the shoulders of Shrimati Ishwar Devi Gupta, who now became the President of the Trust. With the demise of Rev. Swami Nityatmanandaji, members of the Trust felt as if the life and light of the Trust is gone. All of them assembled and took a pledge to carry on the Trust's work with a renewed zeal and dedication.

Board of Trustees Reconstituted

Now the board of Trustees was reconstituted with the inclusion of two sannyasins— Swami Abhishtananda and Swami Krishnananda, both of Ramakrishna Math, Tulasi Math, Rishikesh

and Smt. Pravesh Bajaj of Chandigarh. Smt. Ishwar Devi Gupta became the permanent President and Prof. Dharm Pal Gupta, became the permanent Secretary of the Trust.

Activities from 1975 to 2002

After Swami Nityatmanandaji's demise on 12th July, 1975 upto 26th May, 202 when Smt. Ishwar Devi Gupta left her mortal frame, the activities of the Trust remained as under :

Sri Ma Darshan

During 1975-76, a second edition of 'Sri Ma Darshan' Part IV in Bengali was brought out. The distribution of Prachar literature continued satisfactorily.

Medical and Educational Aid

The Trust provided medical and educational aid to persons who had devoted themselves to leading a higher life.

Dr. B.B. Dhir, M.D. an allopath started giving free consultation twice a week. Some of the medicines prescribed by him were also given free to those who could not afford to buy.

Reading Room cum Lending Library

The Reading Room remains open for two hours in the morning and two hours in the evening. While in the Reading Room magazines and journals mirroring moral and spiritual values are available for reading, books are lent out from the Library to the persons who have enrolled themselves as members by becoming regular subscribers/ donors and/or have deposited Rs.20/- as refundable library security. The Lending Library had about 1000 books on its shelves in 1979. New books, mostly on Indian cultural heritage, are added every year.

Donations/Seva

Sri Ma Trust, in line with its objective of Sadhu-seva, donated ₹50,000/- to Ramakrishna Sevasharama, Varanasi, This enabled Swami Krishnananda of Ramakrishna Ashrama (Tulsi Math), Rishikesh, a close sevak and associate of Swami Nityatmananda, to live his last days at Kashi, thus fulfilling his earnest wish of leaving his mortal body in the holy city of Kashi.

Flood Relief, other Aids and Charities

During the financial years 1976-77 and 1977-78 the Trust donated Rs.706.06 and Rs. 503.34 towards medical aid and sadhu seva. In 1978-79, the amount donated rose to Rs. 5292.14 as it included Rs. 3000/- paid to the local Ramakrishna Mission in their Flood Relief Fund and Rs.1031/- donated to Saket, a home for the handicapped children near Chandigarh.

Audit of the Accounts

Messrs J.R. Khanna and Co., Chartered Accountants, Chandigarh kindly audited the accounts of the Trust in the initial years without charging any fees, all as a labour of love. Later this work has been taken over by his son, Sh. Anil Khanna, Chartered Account, Chandigarh.

Other Activities

Puja, Aarati and Paath from Kathamrita and Sri Ma Darshan

It remained a regular activity of the Trust in the evenings. The permanent Secretary conducted Prayer Meetings daily at Sri Peeth in the evening at a fixed time for two hours in which Pooja-Aarati was followed by holy readings from 'Sri Sri Ramakrishna Kathamrita' and 'Sri Ma Darshan' followed by a discourse and

singing of Bhajans etc. Upanishadic readings took place on Monday, hymn to the Holy Mother was sung on Tuesday, hymn to Sri Sri Thakur on Tuesday, 'Sri Ma Darshan— Sachchi Ma', a poem written by Smt. Ishwar Devi Gupta on Thursday, Sri M. Stotra on Friday, special prayers on Saturday followed by singing of holy songs and readings from the Gita or Srimad-Bhaagavatam on Sunday.

Besides, the founder Secretary held regular discussions on the Gita or some other scripture at Sri Peeth. The devotees sought advice from her and she offered solutions to the problems of the householder devotees. She exhorted the young visitors and children to write a diary and told them methods of diary writing. She was always available to the devotees. She personally supervised and conducted Satsang on Mondays at the residence of Smt. Shakuntala Bansal and on Fridays at Smt. Shaila Issar's residence.

Raamayan Paath

Shri Bansi Lal Chhibar, a famous Raamayani of Chandigarh, regularly gave recitations from 'Raam Charit Manas' once a week for about one and a half hours in the morning.

Celebrations

The Trust regularly celebrated the Birth Anniversaries of Sri Sri Ramakrishna, the Holy Mother, Swami Vivekananda, Sri 'M.' and Swami Nityatmananda with pujas, satsangs, distribution of books, food and cloth. Besides, other important religious festivals are also celebrated in a prayerful manner.

The Trust also distributed, on no profit no loss basis, some of

the important publications of the various Ramakrishna Math and Mission institutions including the illustrated cultural literature for children.

Outstation Sabhas

Swami Nityatmanandaji Maharaj established Sabhas in a number of towns in India. Though autonomous, they were to work on the lines of Sri Ma Trust and keep in touch with the Trust.

The Lucknow Sabha met every Sunday (at Sh. H.C. Bhattacharya's house) for satsang, prayers and paath. It also celebrated religious festivals, specially the Birth Anniversaries of Sri Sri Thakur, the Holy Mother, Swami Vivekananda, Sri 'M.' and Swami Nityatmananda.

The same activities as in the Lucknow Sabha were carried out at the Delhi Centre (at Smt. Padma Gadi's residence), Shimla (at Smt. Vijaya Prabhakar's house), Chamoli (at Dr. A.C. Bhattacharya's residence) and at Bangalore (at Dr. Indra Sanghi's house). Besides, these Sabhas served as centres for distribution of the Trust publications.

Shrimati P. Bajaj also ran a sub-centre in Sector-11 Chandigarh where Satsang and Pujas were held every Sunday afternoon.

Sri Sri Ramakrsihna Kathamrita Centenary Celebrations, February 26, 1982 to February 25, 1983 : Sri Ma Trust celebrated at 'Sri Sri Ramakrishna Kathamrita Peeth', the Centenary of Sri Sri Ramakrishna Kathamrita on 26 February 1982— the day when Sri 'M.', the recorder of the Kathamrita (the Gospel of Sri Ramakrishna) met the Great Master for the first time exactly a hundred years ago. It was a solemn function presided over by Swami Shastranandaji Maharaj, Secretary R.K. Mission, Singapore at that time and graced by the presence of

Swami Kirtidanandaji Maharaj, Secretary Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh and Swami Tattvajnanandaji Maharaj of Vivekananda Students' Home, Chandigarh.

A memorial volume, specially compiled for the occasion, entitled 'Sri Sri Ramakrishna Kathamrita Centenary Memorial' was published and dedicated to Shri Ramakrishna along with pujas, singing of hymns and discourses by the Swamis present on the occasion.

To mark the end of the Kathamrita Centenary year the Lucknow Sabha held impressive celebrations at Lucknow on February 26, 1983 with great enthusiasm generated in no small measure by Sri B. Dey and his band of of bhakta friends. The Lucknow Sabha was blessed in conceiving this prayerful idea.

Spiritual Prachar and Cultural Contacts

The President Smt. Ishwar Devi Gupta visited Panipat, Rohtak and Delhi to meet friends and admirers of the Trust and help the *grihastha* friends to lead a meaningful life of peace. She also spoke to groups of friends at Chandigarh.

Silver Jubilee Day of the Trust

A function was held to commemorate the silver jubilee day of the official establishment of the Trust on December 12, 1992 at Sri Peeth. The bhaktas celebrated the occasion with prayers, puja and sankirtan, followed by distribution of prasad. Similarly 50th anniversary of the Trust was celebrated in Sri Peeth, Sector 19-D, on December 12, 2017. To mark the occasion, the devotees performed Pooja-Aarti-Paatha and sang holy songs which was followed by the distribution of Prasad.

Noopur

With the object of propagating the nectar of Sri Sri Thakur's words, providing glimpses into the thoughts of the Holy Mother,

Swami Vivekananda, Sh. M., writer of Sri Sri Ramakrishna Kathamrita, writer of Sri Ma Darshan, Swami Nityatmananda; the founder Secretary the 2nd President of the Trust, Smt. Ishwar Devi Gupta launched a magazine, titled as 'Noopur' on the 101st birth anniversary of Swami Nityatmanandji in 1994. Later it assumed the form of an yearly magazine. Since then it is being printed every year on the Ganga Dasahara Day.

Shri M. Festivity

The founder Secretary Smt. Ishwar Devi Gupta, was obsessed with the idea of propagating 'Sri Sri Ramakrishna Kathamrita' among the young. She desired that they should well be acquainted with the 'Vyasa' of the modern age. She planned to organize inter school/inter college paper reading or declamation contests on topics pertaining to the ideology upheld by Sri M. For this purpose she created an Endowment Fund of Rupees One Lakh with Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh in 1997 to arrange 'Sri M. Mahotsava' in the Mission Ashrama every year to remember and propagate Sri M.'s ideology. The expenses will be met by the interest amount accrued from the deposit of the Endowment Fund. Consequently, the first 'Shri M. Mahotsava was organized on 24-25 October, 1998 under the guidance of the then Secretary of the Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh, Swami Pitambrananda ji. Delegates had read out to the audience their papers which they had written on topics pertaining to 'Sri Sri Ramakrishna Kathamrita' and M. Since then this festivity is being organized every year at the holy premises of Ramakrishna

Mission Ashrama, Chandigarh.

Shri M. Memorial Endowment

Following the suggestion of a sadhu of Sri Ramakrishna family Sri Ma Trust has instituted a M. (Master Mahashay) Memorial Endowment at the following centres : (1) Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh for Rs. 1,00,000/- in 1996-97 (2) Ramakrishna Mission Vidyapith, Deoghar for Rs. 25,000/- in 1997-98 (3) Ramakrishna Mission Institute of Culture, Calcutta for Rs.50,000/- in 1997-98.

The purpose of creating such an endowment is to bring to light a practical way of living in this world through the teachings of Shri Ramakrishna, so assiduously lived by M. for more than fifty years. To remind us this, the endowment caters to an annual celebration of M. (Master Mahashay) memorial festivity in these centres.

Matajee's physical health was gradually going from bad to worse after she attained the age of eighty. Her Chandigarh based daughter, Dr. Urmi Kessar looked aftr her very affectionately along with her husband Dr. S.V. Kessar and the three Thakur-sent Sevak-santaans named Vinay Mehta, Sandeep Nangia and Nitin Nanda. Smt. Nirmala Kalia served her by being with her day and night for the last 35 years of her mundane existence. In spite of all possible care and looking after her health deteriorated beyond control. Remembering Thakur-Ma all the time even in a state of semi-consciousness, she left for Thakur-Dhaam on May 26, 2002.

As per Matajee's desire her daughter Dr. Urmi Kessar was inducted as Vice-President and her son-in-law Dr. S.V. Kessar as a Trustee on 08.12.1996, when Swami Abhistananadaji's Trusteeship was terminated. Dr. Kamal Gupta, Mataji's son became a Trustee on 22.11.1998. Consequent upon Matajee's demise on 26.05.2002, Dr. S.V. Kessar was made the President of the Trust, Dr. Urmi Kessar served the Trust whole heartedly till

Mataji's demise on 26.05.2002. She took special care of Matajee's health and looked after her comforts during her ill health along with Dr. S.V. Kessar. On 01.03.2006, Sh. Nitin Nanda was inducted as Asstt. Secretary of the Trust. On 02.05.2006, Sh. Sandeep Nangia joined the Trust as a Trustee. Consequent upon the resignation of Sh. Vinay Mehta on 18.09.2005, Sh. Nitin Nanda became the Secretary and Sh. Sandeep Nangia the Asstt. Secretary. Dr. Nirmal Mittal joined as a Trustee on 21.05.2010. Since then they have been rendering service in an unselfish and dedicated spirit.

Regular Satsanga, Pooja and Paath

After the passing away of Rev. Matajee, the Paaths, Sankeertan festivities and pooja continued to be solemnized in Sri Peeth. When Swami Brahmeshanandaji came over to Chandigarh as Secretary of the local Ramakrishna Mission Ashrama in 2002 a monthly satsang was started on his advice which is continuing till date. The Secretary Maharaj of the Ashrama mostly makes himself available to preside over and deliver a spiritual discourse at the function. The devotees are benefitted spiritually.

Publication Work

Although all the parts of Bangla and Hindi Sri Ma Darshan along with the five parts of Sri Sri Ramakrishna Kathamrita in Hindi had appeared in the life time of Matajee along with the parts I to X of 'M.-The Apostle and the Evangelist', the publishing of the remaining parts continued thereafter. Besides, the further editions and reprints of the books continued as per the guidelines of Matajee and the stock position of the existing printed literature of the Trust. In fact some second editions had appeared even during her life time itself enabling devotees to continue the work of further second editions adhering to the instructions of Mataji.

Website Details

Following the ideals laid by Sri M. : Freely ye receive and freely ye give; Sri Ma Trust has launched a website http://www.kathamrita.org wherein we have placed all the recent publications in English for free download and reading. Readers around the world can browse this website and partake of the nectarine words of Sri Ramakrishna.

With continuous efforts from Sri Prashant of Pune the website of Sri Ma Trust www.kathamrita has a modern look and feel, and works on mobile phone as well. This site has books available in PDF format. The automated quotes are available on Facebook as well. Sri Sri Ramakrishna Kathamrita in HTML format has been added very recently. So all the five volumes of the Kathamrita in English are available for sale at www.amazon.com and www.vedanta.com. Devotees abroad can buy directly from Amazon.com and can procure the books. Moreover, the books of Sri Ma Trust are available at exoticindia.com Exotic India Portal. All the Bengali Sri Ma Darshan have been put on the website for downloading.

New Construction of Trust-Building

Sri M Trust completed the construction of the new Extension Building at Sri Peeth in Sector 19, premises in 2015-16. This includes infrastructure for the following :

— Extension of Shrine premises

— Reading Room and Library

— Separate provision to run a homeopathic dispensary

— Warehouse to stock the books

In the institutional category, the building has been nominated for 3rd prize which was showcased by Shri Siddhartha Mahim Bansal, who played a major role in the architecture and the

construction of the building. According to the instructions by Rev. Mataji Smt. Ishwar Devi Gupta, devotees have started staying there for the night once a while for solitude (Nirjan vass) and spiritual sadhana.

Ramakrishna Vivekananda Bhava Prachar Parishad

As the activities of the Trust expanded, it became a member-organisation of the Ramakrishna Vivekanand-Bhava-Prachar Parishad in 2006. This institution was founded by the Belur Math in 1984. The first Annual Celebration of this institution in North India was held at Lucknow on March 11-12, 2006 where the Trust became its member. Since then two delegates from the Trust attend every bi-annual meeting of the Parishad. The meet was represented by 23 member institutions. The history, current activities and future plans of the Trust are presented in these meetings.

The Trust hosted a Meeting of the delegates of Ramakrishna Vivekananda Bhava Prachar Parishad on November 5, 2016 which was attended by over 50 delegates. Swami Sarvalokananda

and other senior monks, namely Swami Nirantaranandaji from Jammu, Swami Ritatmanandaji from Sri Nagar, Swami Satyeshanandaji from Chandigarh presided over the meetings in different sessions.

Acknowledgements

The Trust has expressed its gratitude to its well-wishers, friends, associates, admirers, donors and devotees. Notables among them have been :

Swami Kirtidanandaji, formerly Secretary, Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh, whose good wishes and blessings were always with the Trust. He guided and helped in solving our problems.

Swami Shivasevanandaji, President, Dev Bhumi Trust Sadhupul who mentored the Trust activities and blessed us all.

Smt. Kamla Mazumdar, who served the founder President and the founder Secretary for years and looked after their bodily requirements and attended very affectionately to all the visiting devotees.

Dr. Naubat Ram Bhardwaj, under whose supervision 'Sri Ma Darshan' (Hindi) Parts III to XVI, 'Sri Sri Ramakrishna Kathamrita' Parts I to V and 'M.-The Apostle and the Evangelist' Part IV were printed from Rohtak during 1984-92. He remained under founder President and the permanent Secretary's care, guidance, supervision and service from 16.03.1965 to February, 1973. He did his M.A. and Ph.D. in Sanskrit under Rev. Maharaj ji's guidance.

Sh. Ram Prakash Gupta who helped in the publication of Hindi Literature of the Trust.

Dr. Kamal Gupta who looks after the publications in English and guides the affairs of the Trust from time to time.

Smt. Padma Gadi[1] who served the founder President and the permanent Secretary since 1958 and received their blessings for a pretty long time.

Sh. Vinay Mehta reached at the feet of Smt. Ishwar Devi Gupta in 1986 and served as the Managing Secretary of the Trust w.e.f. 1991 to 2006, in which capacity he admirably and diligently discharged his duties in keeping the accounts of the Trust, corresponding with the devotees on behalf of the President as per her directions, helping her in translations and making corrections wherever approved.

Smt. Sageeta Kapoor served the Trust regularly since January, 1986. She helped in maintaining accounts of the Trust and packing and dispatching of Trust Literature.

Smt. Nirmala Kalia[2] served the founder Secretary and the President w.e.f. 1978 to 2002. She personally looked after her and attended to the visiting bhaktas. Even after the demise of Smti. Ishwar Devi Gupta, she lived at the premises of the office of the Trust at 579/18-B till 2015. She attended to the daily worship at the Sri Peeth and the office premises.

Sh. Ishwar Chandraji[3] came in contact with Smt. Ishwar Devi Gupta in 1978. His wide experience of publications was used in bringing out the 2nd edition of Hindi Sri Ma Darshan Part-I. Both of them brought out the reprints of and all the five parts of Hindi 'Sri Sri Ramakrishna Kathamrita' worked hard for the Trust in a selfless spirit of dedication.

Shri Praveen Sapra, Smt. Savita Tayal, Miss Priti Kapoor, Miss Vandana Mehta, Dr. Vimla Sood and Smt. Savita Sengupta helped the Trust affairs in translations, typing work, in maintaining accounts and rendered self-less service in arranging festivities and

1 Expired in April, 2018.

2 She expired in January, 2015.

3. Expired in May, 2017

performing worship at the Shrine in Sector 19-D.

Sh. Nitin Nanda as Secretary and Sh. Sandeep Nangia as Assistant Secretary have been rendering very valuable service to the Trust. Nitinji came in Mataji's contact during 1990 and Sandeep ji in 1986. Since then they have been contributing their might to the Trust with a selfless zeal and vigour.

Smt. Anuradha Dasgupta and Sh. Ashish Dasgupta of Kolkata took up the responsibility of computerizing all the parts of Bangla 'Sri Ma Darshan' happily and voluntarily. Their devoted efforts led to complete all the sixteen volumes in a period of almost 3 years. Now the Trust can publish any part of Bengali Sri Ma Darshan any time by itself, all due to Thakur's grace.

Appendix-I

List of Donations by Sri Ma Trust

1989-90

1.	Society for the care of the Blind, Chandigah	Rs. 10,000.00
2.	Ramakrishna Math, Vrindaban	Rs. 10,000.00
3.	Sadhu Seva	Rs. 2,200.00
4.	Belur Math, Howrah	Rs. 2,000.00
5.	Aarti Memorial Charitable Trust, New Delhi	Rs. 1,000.00
6.	Tulsi Math, Rishikesh	Rs. 1,000.00
7.	Diary Writing Children	Rs. 650.00
8.	Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh	Rs. 300.00

1990-91

1.	Tulsi Math, Rishikesh	Rs. 76,500.00
2.	Haryana Saket Council, Chandigarh	Rs. 11,151.00
3.	Diary Writing Children	Rs. 2,400.00
4.	Sadhu Seva	Rs. 1,750.00
5.	Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh	Rs. 300.00

1991-92

1.	SOS Childrens' Villages of India, Delhi	Rs. 10,000.00
2.	Tulsi Math, Rishikesh	Rs. 11,093.00
3.	Sadhu Seva	Rs. 1,400.00
4.	Aarti Memorial Charitable Trust, New Delhi	Rs. 500.00
5.	Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh	Rs. 501.00

1992-93

1.	Ramakrishna Math, Kankhal	Rs. 18,000.00
2.	SOS Childrens' Villages of India, New Delhi	Rs. 10,000.00
3.	Society for the Care of the Blind, Chandigarh	Rs. 10,000.00
4.	Haryana Saket Council, Chandigarh	Rs. 10,000.00
5.	Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh	Rs. 6,000.00

1993-94

1.	Ramakrishna Math, Kankhal	Rs. 20,000.00
2.	Punjab Chief Miniser's Flood Relief Fund	Rs. 40,000.00
3.	Haryana Chief Minister's Flood Relief Fund	Rs. 20,000.00
4.	Prime Minister's Earthquake Relief Fund	Rs. 20,000.00
5.	SOS Childrens' Villages of India, New Delhi	Rs. 10,000.00
6.	Society for the Care of the Blind, Chandigarh	Rs. 10,000.00
7.	Haryana Saket Council, Chandigarh	Rs. 11,000.00
8.	Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh	Rs. 2,500.00

1994-95

1.	Bandhua Mukti Morcha, New Delhi	Rs. 2,001.00
2.	Adhyatm Kutir, Chandigarh	Rs. 1,000.00
3.	Ramakrishna Mission Sevashrama, Varanasi	Rs. 50,000.00
4.	Ramakrishna Mission, Lucknow	Rs. 5,000.00
5.	Ramakrishna Ashram (Tulsi Math), Rishikesh	Rs. 10,000.00
6.	SOS Children's Villages of India, New Delhi	Rs. 10,000.00
7.	Society for the Care of the Blind, Chandigarh	Rs. 12,000.00
8.	Haryana Saket Council, Chandigarh	Rs. 12,000.00
9.	Cheshire Homes India, New Delhi	Rs. 10,000.00

10.	Ramakrishna Mission Advaita Ashrama, Varanasi	Rs. 2,000.00

1995-96

1.	Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh (Mobile Health Dispensary)	Rs. 8,000.00
2.	Ramkrishna Ashram (Tulsi Math), Rishikesh	Rs. 12,000.00
3.	Ankur Nursery School, Panjab University	Rs. 1,500.00
4.	Ramakrishna Mission Sevashrama, Varanasi	Rs. 2,000.00
5.	SOS Childrens' Villages of India, New Delhi	Rs. 10,000.00
6.	Society for the Care of the Blind, Chandigarh	Rs. 12,000.00
7.	Haryana Saket Council, Chandigarh	Rs. 12,000.00
8.	Cheshire Homes India, New Delhi	Rs. 10,000.00

1996-97

1.	Ramakrishna Ashram (Tulsi Math), Rishikesh	Rs. 5,000.00
2.	Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh	Rs. 11,000.00
3.	Haryana Saket Council, Chandigarh	Rs. 24,000.00
4.	Society for the Care of the Blind, Chandigarh	Rs. 12,000.00
5.	Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh	Rs. 60,000.00
6.	SOS Children's Villages of India, New Delhi	Rs. 21,500.00
7.	Cheshire Home India, New Delhi	Rs. 10,000.00
8.	Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh	Rs. 40,000.00

1997-98

1.	Ramkrishan Ashram (Tulsi Math), Rishikesh	Rs. 5,000.00
2.	Ramakrishna Mission Vidyapith, Deoghar	Rs. 25,000.00
3.	Ramakrishna Mission Institute of Culrue, Calcutta	Rs. 50,000.00
4.	Society for the Care of the Blind, Chandigarh	Rs. 1,000.00

1998-99

1.	Ramakrishna Mission Institute of Culture, Calcutta	Rs. 50,000.00
2.	Haryana Saket Council, Chandigarh	Rs. 12,000.00

3. Society for the Care of the Blind, Chandigarh	Rs. 12,000.00

1999-2000

1. Orissa Chief Miniser's Relief Fund	Rs. 10,000.00

2000-01

2. Gujarat Earthquake Relief Donation	Rs. 50,000.00

2001-02

1. Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh	Rs. 10,000.00
2. Society for Care of Blind, Chandigarh	Rs. 10,000.00
3. Rotary Club Chandigarh (for setting up Blood Bank)	Rs. 5,000.00
4. Haryana Saket Council	Rs. 10,000.00
5. Sri Ramakrishna Ashrama, Bagga	Rs. 5,000.00

2002-03

1. SOS Children's Villages of India	Rs. 12,000.00
2. Haryana Saket Council	Rs. 12,000.00
3. Society for the Care of Blind	Rs. 12,000.00

2003-04

1. Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh	Rs. 12,000.00
2. Dev Bhumi Trust, Sadhupul	Rs. 52,000.00
3. Haryana Saket Council, Chandimandir	Rs. 12,000.00
4. Society for Care of Blind, Chandigarh	Rs. 12,000.00
5. SOS for Children's Villages of India	Rs. 12,000.00

2004-05

1. Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh	Rs. 12,000.00
2. Haryana Saket Council, Chandimandir	Rs. 12,000.00
3. Society for Care of Blind, Chandigarh	Rs. 12,000.00
4. SOS for Children's Villages of India	Rs. 12,000.00
5. Rotary & Blood Bank Socity, Chandigarh	Rs. 10,000.00
6. Dev Bhumi Trust, Sadhupul	Rs. 38,050.00

7.	The Tribune Trust (PMO) for Tsunami Relief Fund	Rs. 50,000.00

2005-06

1.	Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh	Rs. 12,000.00
2.	Haryana Saket Council, Chandimandir	Rs. 12,000.00
3.	Dev Bhumi Trust, Sadhupul	Rs. 37,000.00
4.	Society for Care of Blind, Chandigarh	Rs. 12,000.00
5.	SOS for Children's Villages of India	Rs. 12,000.00
6.	Ramakrishna Math, Belur Math, Howrah	Rs. 5,001.00

2006-07

1.	Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh	Rs. 12,000.00
2.	Haryana Saket Council, Chandimandir	Rs. 12,000.00
3.	Society for Care of Blind, Chandigarh	Rs. 12,000.00
4.	SOS for Children's Villages of India	Rs. 12,000.00

2007-08

1.	Swami Gahanananda, Belu Math	Rs. 5,001.00
2.	Ramakrishna Vivekananda, Amritsar	Rs. 8,000.00
3.	Ramakrishna Mission Sevashrama, Virindaban	Rs. 2,105.00
4.	Society for the Care of the Blind, Chandigarh	Rs. 15,000.00
5.	Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh	Rs. 21,000.00
6.	Haryana Saket Council, Chandimandir	Rs. 15,000.00
7.	SOS Children's Villages of India, New Delhi	Rs. 15,000.00

2008-09

1.	Uttar Paschimanchal R.K. Viveka, Bhav., Asr.	Rs. 1,000.00
2.	Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh	Rs. 21,000.00
3.	Society for the Care of Blind	Rs. 15,000.00
4.	Haryana Saket Council, Chandimandir	Rs. 15,000.00

2009-10

1.	Raja Ram, Chandigarh	Rs. 1,100.00
2.	Sarda Vidya Mandir, Baddi	Rs. 1,100.00

2011-12

1. Ramakrishna Mission, Belur Math Rs. 15,000.00

2012-13

1. Maa Sarda Vidya Mandir Rs. 8,000.00

Besides the donations as above, Trust had been providing medical and educational aid to the needy persons from time to time. In the past 25 years of its existence, the Trust has been regularly donating to the following institutions :

1. Haryana Saket Council, Chandigarh
2. Society for the care of the Blind, Chandigarh
3. Bal Niketan, Panchkula
4. Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh
5. Ramakrishna Math, Vrindaban
6. Tulsi Math, Rishikesh

In addition, it has also helped the persons affected by earthquake, flood, famine and such other natural calamities.

Advertisements

Sri Ma trust has been giving advertisements regularly since the year 2013 in Prabuddha Bharat, Vivek Jyoti and Vedanta Kesri regarding its publications to-date.

Appendix-II

The Board of Trustees as on 31.12.2017 :

1. Dr. S.V. Kessar … President
   635, Sector 11-B, Chandigarh
2. Dr. Kamal Gupta … Trustee
   N-23, Sector 11, Noida (U.P.)
3. Mr. Nitin Nanda … Secretary
   64, Sector 8, Panchkula (Haryana)

4. Mr. Sandeep Nangia … Asstt. Secretary
   112, Sector 15, Panchkula (Haryana)
5. Dr. Nirmal Mittal … Trustee
   1020, Sector 15, Chandigarh
6. Mr. Ashish Dasgupta … Trustee
   11/12, D.P.P. Road, Naktala, Kolkata
7. Dr. N.R. Bhardwaj … Trustee
   39, Vikas Nagar, Rohtak (Haryana)

May Sri Sri Thakur and the Holy Mother grant all the bhaktas, donors, well wishers and friends their Pure Love, is our earnest prayer.

Jai Maa-JaiThaakur!!

❖ द्वितीय भाग ❖

द्वितीय भाग

श्री 'म' दर्शन से कुछ उद्धरण

ठाकुर श्रीरामकृष्ण के व्यास कथामृतकार मास्टर महाशय के अन्तरंग भक्त स्वामी नित्यात्मानन्द द्वारा रचित श्री म दर्शन ग्रन्थावली— 16 भाग में क्या है, इस विषय में बंगाली पत्रिका 'उद्‌बोधन' के नवम्बर, 1996-अङ्क के अनुसार :

''श्रीरामकृष्ण के देहत्याग के पश्चात् प्रायः 46 वर्ष तक श्री म जीवित रहे (श्री म ने 1932 ईसवी में शरीर छोड़ा)। इस सुदीर्घकाल में उनके पास ठाकुर-कथा सुनने के लिए जिस प्रकार बहुत से स्वदेशी तथा विदेशी भक्तगण जाते, उसी प्रकार बेलूड़ मठ के साधुगण भी जाते थे। ठाकुर-कथा सुनाते श्री म कभी थके नहीं। दीर्घकाल तक श्री म के संस्पर्श में रह कर स्वामी नित्यात्मानन्द उनकी कथावार्त्ता नित्यप्रति डायरी में लिख कर रखते रहे। उन्हीं डायरियों का श्री म बीच-बीच में परिशोधन भी कर देते। पीछे उन्हीं डायरियों पर आधारित स्वामी नित्यात्मानन्द द्वारा रचित 'श्री म दर्शन' नामक ग्रन्थ 16 खण्डों में प्रकाशित हुआ। इस ग्रन्थमाला में श्री म रचित कथामृत की व्याख्या के अतिरिक्त ठाकुर, माँ, दक्षिणेश्वर एवं ठाकुर के पार्षदगणों की अनेक नूतन कथाएँ भी हैं।'' (प्रसंगवश उनकी अपनी भी।)....

'कथामृत' में वक्ता हैं ठाकुर। श्री म यहाँ 'गुप्त' हैं। परन्तु श्री म दर्शन में वक्ता हैं स्वयं श्री म। इसमें वर्णित ठाकुर-वाणी के एवं सभी विषयों के व्याख्याता हैं श्री म। श्री 'म' दर्शन में लगभग 10 वर्ष (1923 से 1932) के श्री म के सम्वाद हैं। इसमें गीता, उपनिषद्, बाईबल, चण्डी, कुरान,

दक्षिणेश्वर एवं ठाकुर, ठाकुर के पार्षदगणों की नूतन कथाओं एवं श्री म द्वारा की गई अन्य प्रमुख-प्रमुख विषयों की व्याख्या सम्बन्धी सन्दर्भों को अलग-अलग कर दिया जाए, ऐसी स्वामी नित्यात्मानन्द जी व माता जी श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता की इच्छा रही। पिछले नूपरों में समय-समय पर श्री म दर्शन में से उद्धरण दिए भी जाते रहे हैं।

अभी हाल ही में चण्डीगढ़ स्थित रामकृष्ण मिशन आश्रम के वर्तमान सचिव स्वामी सत्येशानन्द जी ने भी ऐसी ही इच्छा प्रकट करते हुए कहा था : ''आप लोग श्री म दर्शन में से स्वामी विवेकानन्द की, माँ सारदा की बातें तथा श्री म ने इनके विषय में क्या कहा है, आदि को अलग कर सकें तो अच्छा रहेगा।''

प्रस्तुत लेख इसी दिशा में एक प्रयास है। श्री 'म' दर्शन भाग तीन, 2018 (अभी प्रकाशनाधीन) में से ठाकुर, माँ सारदा, स्वामी विवेकानन्द तथा श्री म द्वारा व्याख्यायित कतिपय अन्य विषयों को उद्धृत किया जा रहा है।

— सं०

ठाकुर की बात

प्रसंगानुसार, सद्य परिवेश के अनुसार ठाकुर-वाणी को व्याख्यायित करते समय श्री म बीच-बीच में ठाकुर-मुख से निःसृत ठाकुर-वाणी को भी ज्यों का त्यों उद्धृत करते हैं। अतः आचार्य श्री 'म' की मुख-विनिःसृत वाणी ऐसे अवसरों पर 'कथामृतकार' द्वारा 'कथामृत' की व्याख्या ही है। ऐसे कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं श्री म दर्शन-3 में से :

''ठाकुर कहा करते, यहाँ हमारा घर नहीं है। यहाँ रहना चाहिए

दासीवत्। बड़े लोगों के घर की दासी कहती है, 'यह हमारा घर', 'वह मेरा कमरा'; किन्तु अन्तर में जानती है, मैं दासी हूँ, यह घर मेरा नहीं। मेरा घर उसी ग्राम में है। वहाँ मेरे बाल-बच्चे रहते हैं। जहाँ घर, तहाँ मन।

''अधरसेन को ठाकुर ने कहा था, झटपट पूरा कर लो। मनुष्य का जीवन है जैसे कर्म करने के लिए ग्राम से शहर में आना। कर्म होते ही लौट जाता है अपने घर। अधरसेन डिप्टी मैजिस्ट्रेट थे। वयस् थी तीस। ऑफिस के उपरान्त रोज़ ढाई रुपये खर्च करके गाड़ी से दक्षिणेश्वर जाया करते। बेनेटोला में थी बाड़ी। जाते ही सो जाते। खूब काम था। बड़ा फाटक बन्द होता रात के दस बजे। ठाकुर तब जगा देते उन्हें। ऐसा छह मास किया। फिर देह गई।''

— श्री म दर्शन, तीसरा भाग, पृष्ठ 34

''रुचि और प्रकृति देखकर ठाकुर एक-एक जन के लिए एक-एक प्रकार की व्यवस्था किया करते थे। एक पथ सबका नहीं। भिन्न लोगों के भिन्न पथ। जभी तो (गुरु) तीन जनों को तीन प्रकार से कहते हैं। एक जन से कहते हैं, तुम कुछ दिन तीर्थ और तपस्या करके आओ। एक जन से कहते हैं, तुम जैसे हो, वैसे ही गृह में रहो। और एक जन को अपने पास रख लेते हैं कि सेवा करे। क्यों ऐसी भिन्न व्यवस्था? प्रकृति जो भिन्न है। किन्तु गन्तव्य है सबका ही एक, ईश्वर। एक ही जामा (कुरता) सबके शरीर पर नहीं आता।''

— श्री म दर्शन, तीसरा भाग, पृष्ठ 77

''ठाकुर साधुसंग करने के लिए कहा करते। बोलते, साधुगण हैं आग का कुण्ड और संसारी भीगी काठ। आग के निकट जाने से जल क्रमशः सूख जाता है। साधुसंग करने से मन की विषय-वासनाएँ सूख जाती हैं। भीगी काठ अथवा विषय-वासना द्वारा कलुषित मन। और कहते, ''देवता, साधु और राजा— इन्हीं तीनों जगहों पर जाते हुए— हाथ में कुछ ले जाना चाहिए। ठाकुर ने कह दिया था हम लोगों से, यहाँ आते हुए थोड़ा कुछ

हाथ में लाना चाहिए— अन्ततः लवंग, इलायची या एक हरड़ ही। और कुछ देने की शक्ति न हो तो कम-से-कम यह तो करना ही चाहिए। हमारे देश के लोग ये सब भूल गए हैं। फल देना चाहिए देवता के स्थान पर। क्यों? उसका अर्थ है, हे भगवान! मेरे कर्मों का जितना सुफल है, सब तुम्हें देता हूँ। फूल माने क्या? यही ना, मन रूपी फूल। Abstract (अमूर्त्त भाव) में मन सब समय बैठता नहीं। जभी concrete (प्रतीक) रूप कर लेता है। यह फूल मनफूल का ही concrete form (प्रतीक रूप) है। ठाकुर सब बातें बतला गए हैं। उनकी बातें जो सुनेंगे, वे बच जाएँगे। वे थे personification of truth and morality, honesty and purity, truthfulness and real spirituality (सत्य और धर्म, सत्यता और पवित्रता, सत्यभाषण और यथार्थ आध्यात्मिकता के मूर्तिमान विग्रह)।''

— श्री म दर्शन, तीसरा भाग, पृष्ठ 141

श्री म *(सबके प्रति)*— ठाकुर बोले थे, ''ठीक से बैठे रहो जो जहाँ पर है, हिलो मत।' जैसे कर्णधार (नाविक) कहता है तूफान के समय, खबरदार! हिलो मत, डूब जाओगे। संसार में भी वैसे ही जो जहाँ पर है, स्थिर हुए रहो। अर्थात् और बन्धन में न पड़ें। दो-एक बच्चे हो गए तो और नहीं। अब भाई-बहन की तरह रहो। काज, कर्म, व्यवसाय, वाणिज्य भी और न बढ़ाया जाए। खाना चले— इतना हो तो बस।''

— श्री म दर्शन, तीसरा भाग, पृष्ठ 163

श्री म *(करुण स्वर में)*— मनुष्य की क्या वैसी vision (दृष्टि) है? वे देख पाते थे कि किसके भीतर क्या है। गिरीश बाबू को इधर के लोग कहते, शराबी, वेश्या के घर जाता है। किन्तु ठाकुर ने देखते ही पहचान लिया— महत् व्यक्ति है, भीतर में 'माल' है।

''शिवनाथ शास्त्री ने लिखा था, उनके यहाँ जब थियेटर के लोग यातायात करने लगे तब हमने जाना बन्द कर दिया। Good boy— (भले लड़के) बन गए और क्या?

''वे पतितों को स्थान नहीं देंगे तो कौन देगा? वे आते ही हैं पतितों के लिए; और फिर साधुओं के लिए। हमने सदा यही बात उनके मुख से सुनी है।

''चैतन्यदेव ने जगाई-मधाई का उद्धार किया। क्यों? यही दिखाने के लिए कि मैं पतितों के लिए ही आता हूँ।''

बड़े अमूल्य— स्वामी जी ने चिट्ठी में एक जगह लिखा है, भगवान पतितों के लिए ही आते हैं।

श्री म— स्वामी जी ने नूतन बात फिर क्या कही? जो युग-युग में कहा गया है, वही कहते हैं। तो भी नूतन ढंग से बोले हैं अंग्रेज़ी में। देशी भाषा में, बंगला में, अवतार का नाम ही हुआ पतित-पावन।

— श्री म दर्शन, तीसरा भाग, पृष्ठ 281

''लैक्चर दोगे तो तुम्हारा 'पास' कहाँ है? कहा था, उस देश (कामार पुकुर) में तालाब के किनारे कम्पनी ने ज्यों ही नोटिस लगा दिया, त्यों ही शौच जाना बन्द हो गया। उससे पहले कोई किसी की बात सुनता ही नहीं था। 'कमीशन' कहाँ? Credentials (परिचय पत्र) कहाँ? स्वामीजी की बात कहो तो वह भिन्न। उन्हें कमीशन था।

''ठाकुर की इच्छा थी ईस्ट-वैस्ट का मिलन हो। वैस्ट इस देश की spirituality (आत्मविद्या) लेगा; और यह देश वैस्ट की साइन्स आदि, उस ओर की वह सब लेगा— आदान-प्रदान होगा। इस देश से ईश्वर में श्रद्धा, भक्ति, विश्वास उस देश में जाएगा और उनका जड़-विज्ञान इस देश में आएगा। उससे दोनों का ही मंगल है।

''यह कर्म क्या सब कर सकते हैं? स्वामीजी का ही कर्म है। दूसरे लोग तो बोलना होता है कुछ, और बोलते हैं कुछ; making confusion worse confounded (संशय को और भी गुरुतर करते हुए)। ठाकुर कहते, 'रोगी बैठा हुआ था, वैद्य ने आकर लिटा दिया।'

— श्री म दर्शन, तीसरा भाग, पृष्ठ 319

पाठक पढ़ रहे हैं, श्रीरामकृष्ण बोले— किन्तु उनके दर्शन करने पर ही सब संशय दूर होते हैं। ...ईश्वर-दर्शन करने पर कर्मत्याग होता है। मेरी इसी प्रकार पूजा उठ गई थी। काली-मन्दिर में पूजा किया करता। हठात् दिखा दिया, सब चिन्मय— कोशा-कुशी, वेदी, कमरे की चौकाठ, सब चिन्मय! मनुष्य, जीव-जन्तु— सब चिन्मय!.... दिखा दिया यही विराट मूर्ति ही शिव। ...फूलों के वृक्ष मानो एक-एक फूलों का गुलदस्ता।

श्री म *(भक्तों के प्रति)*— ईश्वर-दर्शन के टेस्ट (परख) की कथा क्यों बताई, बताओ तो सही?

श्री म निज ही उत्तर देने लगे, ''पीछे कहीं भक्तगण मन में यह न लाएँ कि हमारा तो हो गया है। इसीलिए कहा।''

— श्री म दर्शन, तीसरा भाग, पृष्ठ 339

श्रीरामकृष्ण मास्टर से बोले, 'उस दिन देखा यह 'खोल' छोड़कर सच्चिदानन्द बाहर आ गए। आकर बोले— 'युग-युग में मैं अवतार होता हूँ।' तब सोचा शायद मन के विचार से ऐसी बात बोल रहा हूँ। फिर चुप रहकर देखा। तब देखता हूँ, आप ही बोलता है— शक्ति की आराधना चैतन्य ने भी की थी। ...देखा, पूर्ण आविर्भाव! तभी सत्त्व गुण का ऐश्वर्य।

श्री म— पहले से ही फील्ड (भूमि) तैयार कर लेते हैं। और कोई नहीं था वहाँ अन्तरंगों को छोड़। जभी अपना स्वरूप बताया। बोलते, मैं वही सच्चिदानन्द परमब्रह्म हूँ। अब अवतार होकर आया हूँ। वे जो अवतार हैं, उसका greatest evidence (सबसे बड़ा प्रमाण) है उनके निज मुख का यह महावाक्य। अर्जुन से श्री कृष्ण ने यही बात कही थी, मैं ही परमब्रह्म हूँ। जभी अर्जुन बोले, 'स्वयं चैव ब्रवीषि मे।'

— श्री म दर्शन, तीसरा भाग, पृष्ठ 350

आश्रम व्यवस्था

ठाकुर कहते : एक हाथ से जगत के कार्य करो और दूसरे हाथ से ईश्वर को पकड़े रखो। समय आने पर दोनों हाथों से ईश्वर को पकड़ लो। यह समय 'वानप्रस्थ आश्रम' कहलाता है।

श्री म *(भक्तों के प्रति)*— आजकल तो उस प्रकार कोई भी वानप्रस्थ के लिए नहीं जाता। नाम सुनते ही भय होता है। पुत्र, कन्या, गृहस्थ के मोह में जड़ित हुए पड़े हैं। सुनते हैं, पहले बहुत लोग वानप्रस्थ के लिए जाते थे। (शुकलाल के प्रति) और फिर यह भी है— 'यदहरेव विरजेत् तदहरेव प्रव्रजेत्।' वैराग्य होते ही वन में चले जाना।

जनैक भक्त— वानप्रस्थ के समय यदि वैराग्य न हो तो भी जाना?

श्री म— हाँ, तब भी जाना पड़ता था। अब कहाँ जाते हैं लोग? 'पञ्चाशदूर्ध्वं वनं व्रजेत्' (पचास के ऊपर वन में जाए)— यह है साधारण नियम। इसका फिर व्यतिक्रम भी है— 'यदहरेव विरजेत् तदहरेव प्रव्रजेत्' (जिस दिन वैराग्य हो, उसी दिन ही प्रव्रज्या ले ले— जाबालोपनिषद् 4)। यह है असाधारण नियम। कोई-कोई इस बात को contradiction (विरुद्ध उपदेश) कहते हैं। किन्तु यह नहीं। शास्त्र का contradiction (विरुद्ध उपदेश) जिसको कहते हैं, वह भी तो त्याज्य नहीं। कारण, मनुष्य ने नहीं कहीं ये बातें। सब भगवान का निर्देश हैं। अर्थ न समझ सकने के कारण वे ऐसी बात कहते हैं। स्थान, काल, पात्र भेद से विभिन्न व्यवस्था दी गई है।

''पचास पार होने पर वन में जाना यह व्यवस्था भी सत्य, और फिर जब वैराग्य होगा, तभी वन में जाना, यह भी सत्य।

''यह तो था साधारण नियम कि प्रथम गुरुकुल में वास करके, गुरु-सेवा द्वारा विद्या-अर्जन और चरित्र गठन करना। इसे ही student life अथवा ब्रह्मचर्य आश्रम कहते हैं। यहाँ पर कठोर discipline (अनुशासन) की शिक्षा पाता है। फिर यही जीवन्त शिक्षा लेकर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना। यहाँ धर्मपालन, अर्थलाभ और कामभोगादि करेगा। पूर्व के आश्रम

की कठोर शिक्षा के फल से यहाँ पर पदस्खलन का भय रहते हुए भी, पच्चीस वर्ष इस आश्रम की सेवा करके तृतीय आश्रम— वानप्रस्थ ग्रहण करना। यह एक प्रकार से आजकल की retirement (अवसर ग्रहण) की तरह ही है। दीर्घकाल गृहस्थ में काजल की कोठरी में रहने के कारण मन में जो-जो दाग लग जाते हैं, उन सबको छुड़ाने की चेष्टा करता है इस आश्रम में। तत्पश्चात् मलमुक्त मन होते ही संन्यास ग्रहण करना। तब सर्वदा ईश्वर-चिन्तन में निमग्न रहेगा।

''यह हुआ साधारण नियम। किन्तु किसी-किसी के पूर्वजन्मों के संस्कार सहायता करते हैं। उसे इस जन्म में सारा circle (चक्र) घूमना नहीं पड़ता। इसके लिए ही है व्यतिक्रम। जब ही ईश्वर-चिन्तन करने की प्रबल वासना जाग्रत होगी, तब ही गृहस्थ आश्रम अर्थात् कर्मकाण्ड त्याग कर देगा। एक नियम क्या सब के लिए चलता है? जिसके जैसे संस्कार, उसको वैसा ही करना होगा।''

श्री म *(भक्तों के प्रति)*— संन्यास माने मन में त्याग। गृह में रहकर संन्यासी खूब कम, प्रायः दुर्लभ। जनकादि का हुआ था, ठाकुर ने कहा था। फिर भी जो गेरुआधारी, जिन्होंने बाहर से त्याग किया है, ceremony (संस्कार) किया है, उनसे expect (आशा) की जाती है। ठाकुर ने बताया, पंचवटी में साधु बैठा कपड़ा सिलाई करता है और गल्प करता है, फलाने बाबू ने खूब खिलाया— हलुआ, जलेबी, कचौरी (सब का हास्य)। इनका बाहर से त्याग हुआ है; भीतर से नहीं। (डॉक्टर के प्रति) क्या है गीता में?

डॉक्टर कार्त्तिक— न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते।
न च संन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति॥
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते॥

[कर्मों को आरम्भ ही न करने से मनुष्य निष्कर्मता को प्राप्त नहीं होता। न ही (कर्मों को) छोड़ने मात्र से सिद्धि प्राप्त करता है। कर्मेन्द्रियों पर नियन्त्रण करके भी जो मूढ़ मनुष्य इन्द्रियों के विषयों का मन से चिन्तन करता रहता है, वह मिथ्याचारी कहलाता है। — गीता 3:4, 6]

— श्री म दर्शन, तीसरा भाग, पृष्ठ 113-146

माँ की बातें माँ के ही मुख से

आज है शनिवार, 22 सितम्बर, 1923 ईसवी, 5वाँ आश्विन, 1330 (बंगला) साल।

श्री म बोल रहे हैं, माँ कहती हैं— promise (प्रतिज्ञा) करती हुईं :

1. ठाकुर के जो शरणापन्न हैं, अन्ततः मृत्यु के समय ही चाहे क्यों न हो, ठाकुर को उनके निकट दर्शन देना ही होगा।

2. देहधारण करने पर दुःख-कष्ट तो हैं ही। विधाता की भी इनको रोकने की क्षमता नहीं। तो भी शान्ति चाहते हो तो साधन, भजन करो।

3. मृत्यु कब आएगी, उसका जब निश्चय नहीं है, तब फिर काल-अकाल विचार करके बैठे रहने से तो अच्छा है जितना शीघ्र हो, तीर्थ करना।

4. कर्म समाप्त क्यों नहीं होते, इस प्रश्न के उत्तर में माँ ने कहा है— लाटाई पर बहुत सूत है। वह सब उतरेगा तभी तो खाली होगा।

5. ठाकुर ने एक दिन के लिए भी मुझे कष्ट नहीं दिया।

श्री म ने ये पञ्चरत्न उपहार में देकर भक्तों से कहा— ''आप बोलिए जिसको जो याद है, माँ की वाणी।'' एक-पर-एक भक्त बोलने लगे :

6. (ठाकुर के शरीरत्याग के पश्चात्) वृन्दावन जाते समय मुझे ठाकुर का इष्ट कवच पूजा करने के लिए (ठाकुर ने) बोला था, रेल के पायदान पर खड़े होकर।

7. ठाकुर को मेरे लिए चिन्ता हुई थी। कहा था, गाँव की लड़की (दक्षिणेश्वर) आकर न जाने कितना लज्जित करेगी। मैंने माँ से (जगन्नाथ से) प्रार्थना की थी। जभी कुछ नहीं हुआ।

8. सात बार स्वप्न देखकर एक भक्त श्री हट्ट से (मुझे) देखने आया था।

9. ठाकुर अपने कक्ष में भक्तों के संग नृत्य, कीर्तन किया करते। मैं नहबत से बेड़े के झरोखे से खड़ी-खड़ी देखा करती।

10. देखने में सुन्दर, धनी लोगों के संग ठाकुर कभी-कभी बाग में टहलते। फिर आकर मुझे पूछते, बताओ तो कौन सुन्दर है?

11. नहबत के उसी छोटे कमरे में सब चीज बस्त रहतीं। भक्त स्त्रियाँ— गौरदासी, योगेन, गोलाप— ये भी कभी-कभी मेरे संग उसी कमरे में ही रहतीं। और उस पर फिर घर में ही टीन में जीवित मछलियाँ कलकल करतीं। उतने छोटे-से कमरे में रहते हुए भी मुझे कोई कष्ट-बोध नहीं था केवल पाखाना छोड़। प्रातः शौच का दबाव होता तो रात को (अँधेरे, अँधेरे) ही जाया करती गंगा के किनारे।

12. मेरे पास इतना काम था, तब भी ठाकुर छीका बनाने के लिए पटसन मँगवा दिया करते। कहते 'सन्देश' रखने होंगे, एक छीका बना दो। आलसी बनकर बैठे रहने से स्त्रियों के मन में कुभाव आता है। जभी तो वैसा करते थे लोकशिक्षा-जन्य।

13. पुरी में ठाकुर की छवि के निकट घी का टीन था। घर का दरवाज़ा बन्द करके मैं मन्दिर गई थी। लौटकर कमरा खोल कर देखती हूँ टीन पर चींटियाँ चढ़ रहीं हैं और ठाकुर की छवि भूमि पर लेटी हुई है।

14. ठाकुर मातृभाव खूब पसन्द करते थे। लोकशिक्षा के लिए तभी तो मुझे रखा है।

15. अल्प वयसी सुन्दरी विधवाओं को किसी भी पुरुष का विश्वास नहीं करना चाहिए, बाप-भाई का भी नहीं।

16. कितने गर्भपात किए हैं, अथवा बीस-पच्चीस सन्तानें प्रसव की हैं, ऐसे सब असंयमी या रुग्ण जनों के द्वारा (पाद) स्पर्श करने से ही तो रोग है। नहीं तो इस शरीर को और फिर रोग कैसा?

17. ठाकुर से कहा था, एक भी लड़का नहीं है, कैसे मैं दिन काटूँगी। उन्होंने प्रबोध देकर कहा था, एक ही लड़के के लिए तुम सोचती हो। कितने ही अमूल्य धन लड़के आएँगे इसके पश्चात्। अब वही देख रही हूँ।

18. कामारपुकुर में लाहाओं की बाड़ी से लक्ष्मीपूजा के दिन माँ लक्ष्मी आईं थीं। ठाकुर की माँ ने पहचान न सकने के कारण विदा कर दिया। तो भी माँ लक्ष्मी बोली थीं, 'मेरी दृष्टि वैसी ही रहेगी।' इसीलिए कामारपुकुर में मोटे भात और कपड़े का अभाव नहीं होता।

19. दिन जाने पर रात आती है, रात जाने पर दिन आता है, इसी सन्धि-क्षण में जप, ध्यान करना चाहिए नियमित भाव से। कारण, किस समय सुसमय आ पड़े!

20. ठाकुर सब खाते हैं; जो दो, सब ही खाते हैं। फिर भी किसी को अच्छी तरह खा लेते हैं, किसी पर दृष्टि-भोग; अथवा किसी का मात्र स्पर्श ही करते हैं! ठाकुर ने खाया अथवा नहीं खाया, वह क्या मैं देखती नहीं? वे न खाएँ तो क्या मैं खा सकती हूँ? वे खाते हैं। उनके चक्षु से एक ज्योति आकर सब रस शोषण कर लेती है। उसके पश्चात् उनके अमृतहस्त के स्पर्श से दुबारा फिर समस्त पूर्ण हो जाता है।

21. जिस स्थान पर उनकी पूजा होती है या कथा होती है, अथवा उनका 'पीठ' (पवित्र स्थान) होता है, वहाँ पर उनकी दृष्टि रहती है।

22. ठाकुर का शरीर खूब मोटा था और खूब सुन्दर था। पीढ़े पर बैठने से समाता नहीं था।

23. षोडशी पूजा हुई थी गंगाजल के मटके के पास।

24. कामारकुपुर में मैदान में मैं सूखा गू कुचल कर आ जाया करती। बाड़ी आकर 'श्री विष्णु' 'श्री विष्णु' कहकर शुद्ध हो जाती।

25. मठ आजकल का बड़ा तीर्थस्थान है। योगेन के असुख में वृन्दावन में मुझे बड़ी चिन्ता हो गई थी।

26. काशीपुर में ठाकुर को खिला दिया करती थी। एक बार पैर में मोच आ जाने के कारण कई दिन जा नहीं पाई ऊपर। हाथ में नथ दिखलाकर नरेन्द्र को इंगित से बोले थे, 'टोकरी में रखकर ले आ ना!' रसिक पुरुष थे ठाकुर।

27. कभी-कभी दो-दो मास पश्चात् ठाकुर के दर्शन कर पाती थी।

28. माँ कहती हैं, जिनका नाम ज्ञात है, उनके लिए जप करती हूँ। जिनका नाम नहीं पता उनके लिए ठाकुर से यह कह कर प्रार्थना करती हूँ, 'ठाकुर' मेरी अनेक सन्तानें हैं, कौन कहाँ है मैं नहीं जानती। तुम उन सबका मंगल करो।'

29. (भाटपाड़ा के) बड़े ललित बाबू ने कहा, माँ, जप-ध्यान मैं तो नहीं कर सकूँगा। माँ बोलीं, अच्छा, तुम्हें कुछ भी करना नहीं होगा।

30. 'जुगीपाड़ा' से पूजा के समय चीज़-बस्त आने पर औरों ने ली नहीं, किन्तु मैंने ले ली थीं और बरामदे में रखने के लिए कह दिया था।

31. एक भक्त पागल हो गया था। उसने माला लौटा दी थी। मन्त्र भी वापिस देना चाहता था। माँ बोलीं, 'वह क्या वापिस लिया जाता है, बच्चे?'

32. जिसने मन्त्र पा लिया है, जो ठाकुर के शरणापन्न है, उसका ब्रह्मशाप भी कुछ नहीं कर सकता।

33. अन्तिम समय ठाकुर को उन्हें दर्शन देना ही पड़ेगा जो उनके शरणागत हैं।

34. ठाकुर बोले, घर में रहने से ही होगा। स्वामीजी बोले, संन्यास न होने से होगा नहीं। यह विरोध क्यों? इस प्रश्न के होने पर माँ बोलीं, विरोध नहीं, दोनों जन एक बात ही बोले हैं। घर में जो रहेंगे, उनके मन में संन्यास होगा। अनासक्त होकर उन्हें संसार करना होगा।

35. निद्रित व्यक्ति खाट पर सोया पड़ा है। खाट समेत उसे अन्य स्थान पर ले जाया गया। निद्रा भंग होने पर वह क्या हठात् समझ सकेगा कि अन्य स्थान पर आ गया है? वैसे ही गृहस्थ में रहते हुए मोह-निद्रा टूटे बिना समझ में नहीं आता कि माया, मोह से कितना आगे बढ़ चुका है या भली प्रकार बढ़ रहा है।

36. प्रश्न हुआ, कैसे ईश्वर-लाभ होता है। माँ बोलीं, किसी प्रकार से भी नहीं, किसी प्रकार भी उन्हें पाया नहीं जाता। फिर भी यदि उनकी कृपा हो जाए, तब ही होता है।

37. एक दिन माँ बोलीं, मेरा ध्यान करने से ही होगा। बात हठात् उलट कर फिर बोलीं, ठाकुर का ध्यान करने से ही होगा।

श्री म *(भक्तों के प्रति)*— कहती हैं, ठाकुर और मैं एक। यह बात स्पष्ट करके पहले भी बोली है, ठाकुर और मैं अभेद।

38. एक भक्त ने आत्महत्या की थी। एक जन ने कहा, इससे उसका

बुरा होगा। माँ सुनकर बोलीं, 'नहीं, बुरा नहीं होगा, ईश्वर के लिए जो की है।'

39. दुर्गाचरण (नाग महाशय) को खूब मिर्चें देकर चच्चड़ि (सूखी भाजी) बना देने के लिए ठाकुर ने कहा। तैयार होने पर ठाकुर ने जीभ से छूकर तनिक खाई, तब फिर दुर्गाचरण ने प्रसाद पाया।

40. मास्टर (श्री म) की पुस्तक (कथामृत) में मानो ठाकुर ही बातें कर रहे हैं। मास्टर ने एक हजार रुपया दिया था घर बनवाने के समय। अब भी महीना-महीना तीस-पैंतीस रुपया देता है।

— श्री म दर्शन, तीसरा भाग, पृष्ठ 133

स्वामी विवेकानन्द-विषयक बातें

स्वामीजी ने मठ क्यों किया

श्री म *(संन्यासियों के प्रति)*— स्वामीजी ने मठ क्यों किया? आहा, क्या-क्या जो कष्ट पाए हैं उन्होंने! सारा भारतवर्ष घूमकर साधुओं का कष्ट देखकर मठ बनाया; जिससे लड़के एक मुट्ठी खाकर निश्चिन्त होकर उनका चिन्तन कर सकें। जानते थे लड़के यह कष्ट नहीं सह सकेंगे। जभी मठ। अमेरिका में ही कुछ कम कष्ट हुआ? आहार नहीं, वासस्थान नहीं, वस्त्र नहीं, शीत सामने। कोई परिचित भी नहीं और फिर पॉकेट (जेब) खाली।

स्वामीजी का प्रधान अवदान

''यदि कोई कहे, स्वामीजी ने क्या किया है? एक बात में उसका उत्तर है, भारत की हिप्नोटिज्म (मोहनिद्रा) तोड़ गए हैं। यही है उनका प्रधान अवदान। फिर उन्होंने ही सर्वप्रथम अंग्रेज़ी के द्वारा वेदान्त का गूढ तत्त्व, भारत की सभ्यता का प्रचार किया। यही फर्स्ट टाइम। उनकी भाषा कैसी ओजस्विनी! प्रत्येक ही लाइन मानो बातें करती है, ऐसी जीवन्त! कैसे अध:पात में यह देश गिर गया था। लड़कियाँ तक बिगड़ गई थीं अंग्रेज़ों के आदर्श से। कम दुर्गति? स्वामीजी ने उसका क्या किया? अंग्रेज़ को देखकर

हम भय से काँपते थे, स्वामीजी ने वह भय दूर किया। उन्हीं अंग्रेज़ों ने आकर फिर उनके पाँव का जूता बाँध दिया। स्वामीजी गंगा में स्नान करने जाते हैं, वे लोग आकर उनका शरीर अँगोछे से रगड़ देते हैं। और फिर अंग्रेज़ महिलाएँ हुक्का सजा देतीं!

''अमेरिका के थाउजेण्ड आइलैंड्स पार्क में कोई-कोई उनके दर्शन करने गए थे। उन्होंने कहा था, 'We have come to you with the same regards with which we would have gone to Christ if he would be living today.' (क्राइस्ट यदि आज जीवित होते तो उनके पास जिस श्रद्धा से हम जाते, उसी श्रद्धा से ही आपके पास आए हैं।) अर्थात् आप ही हमारे क्राइस्ट हो— You are the Christ to us! वे तब फिर और आपत्ति नहीं कर सके। कैसी गम्भीर श्रद्धा!

''स्वामीजी ने स्वयं कहा है, ठाकुर मेरी गर्दन पकड़कर सब काज करवा ले रहे हैं। ठाकुर जो अवतार हैं, इसका प्रमाण बाहर से कुछ देखना हो तो स्वामी जी का wonderful life (अलौकिक जीवन) है। और सबसे बड़ा प्रमाण है ठाकुर के निज मुख की वाणी। वे निज बोले हैं, 'मैं अवतार।'

''एक समय भारत के लोग मन में सोचते थे, अंग्रेज़ों का सब ही अच्छा है। What Shakespeare says (शेक्सपीयर ने क्या कहा है) मिल, जेम्स— इन सब की खूब दुहाई देते। स्वामीजी ने वह तोड़ दिया। मुझे लगता है, जेम्स भी अन्त में बोले थे, life (जीवन) की problems solve (समस्या का समाधान) एकमात्र वेदान्त करता है और कोई नहीं। आहा, कैसी शक्तिशाली भाषा है स्वामीजी की! मृत शरीर में प्राण संचार कर देती है! कारलाइल (Carlyle) की भाषा भी उसके पास नहीं ठहरती। स्वामीजी भारत की दृष्टि-शक्ति को अपने अतुल आध्यात्मिक ऐश्वर्य की ओर आकृष्ट कर गए हैं— यही है स्वामीजी का अवदान।''

— श्री म दर्शन, तीसरा भाग, पृष्ठ 194-196

भविष्य-द्रष्टा स्वामी विवेकानन्द

आज के युग के अवतार ठाकुर श्रीरामकृष्ण परमहंस के अन्तरंग शिष्य नरेन्द्रनाथ, स्वामी विवेकानन्द के विषय में श्रीरामकृष्ण कहा करते : ''सभी भक्तों में कोई षट्दल कमल है, कोई अष्टदल, पर नरेन (नरेन्द्र) सहस्रदल कमल है।'' स्वामी विवेकानन्द एक ऐसे आधार हैं, ऐसी बुनियाद हैं जिस पर भारत का विराट सांस्कृतिक महल खड़ा है। अपने अन्तिम समय में ठाकुर श्रीरामकृष्ण ने कहा था : 'नरेन शिक्षा दिबे' अर्थात् नरेन (जगत् को) शिक्षा देगा। यही नहीं, यह बात उन्होंने दीवार पर लिख भी दी थी।

आगे हुआ भी ऐसा ही। वर्ष 1893 में शिकागो (अमेरिका) में हुए विश्व धर्म सम्मेलन में दिए अपने भाषणों के माध्यम से उन्होंने भारत की वैभवशाली सांस्कृतिक परम्पराओं की

ध्वजा पताका पूरे विश्व में फैलाई।

ज्ञान, भक्ति, कर्म और राजयोग— इन चारों योगों में पूरी तरह प्रतिष्ठित स्वामी विवेकानन्द के लिए संसार में कुछ भी अनजाना नहीं था। ठाकुर की भान्ति वे भी किसी भी व्यक्ति का अतीत, वर्तमान और भविष्य, सब जान सकते थे, बता सकते थे। वे एक ऋषि थे, युग-द्रष्टा। किसी के भी भविष्य में झाँक लेना उनके लिए साधारण-सी बात थी। इस लेख में वर्णित घटना उनके इसी गुण की ओर इंगित करती है।

हुआ यूँ कि श्री म ट्रस्ट के सचिव श्री नितिन नन्दा स्वामी शिवसेवानन्द* से मिलने उन द्वारा संचालित 'श्रीरामकृष्ण तपोवनम्' आश्रम में साधुपुल (हिमाचल) गए हुए थे। स्वामीजी की महिमा पर बात करते-करते स्वामी शिवसेवानन्द ने उन्हें 'योगी कथामृत: एक योगी की आत्मकथा' (परमहंस योगानन्द) में से एक अध्याय 'मैं पुन: पश्चिम लौटा' पर आधारित एक कथा सुनाई। स्वामी विवेकानन्द के दर्शनों के पश्चात् परमहंस योगानन्द के प्रिय शिष्य श्री डिकिन्सन को हठात् वर्षों पुरानी घटना स्मरण हो आई और वे सोचने लगे— इन्होंने ही मुझे डूबने से बचाया था और अवश्य ही ये (स्वामी विवेकानन्द) मेरे गुरु होना स्वीकार कर लेंगे। स्वामीजी तुरन्त उसके मन की बात ताड़ गए और बोले— ''नहीं, मैं तुम्हारा गुरु नहीं हूँ। भविष्य में एक व्यक्ति तुम्हें चाँदी का एक गिलास देंगे। वे ही तुम्हारे गुरु होंगे।'' यह घटना सितम्बर, 1893 की है। भविष्य में श्री डिकिन्सन को चाँदी का गिलास देने वाले उनके गुरु थे स्वामी योगानन्द।

यह समस्त घटना श्री नितिन नन्दा ने मुझे सुनाई तो मन में हुआ क्यों ना 'नूपुर' के माध्यम से अन्य जन भी स्वामी

---

* रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द छात्रावास, चण्डीगढ़ के पूर्व इंचार्ज स्वामी

विवेकानन्द के जीवन के साथ जुड़ी इस घटना को जानें। प्रस्तुत है उक्त घटना को दर्शाते हुए कुछ अंश 'एक योगी की आत्मकथा के अध्याय 'मैं पुनः पश्चिम लौटा' में से।

—सम्पादक

परमहंस योगानन्द लिखते हैं :

....

''प्रति वर्ष लॉस ऐंजेल्स केन्द्र में बड़े दिन का उत्सव मनाया जाता है। इस अवसर पर 24 दिसम्बर (आध्यात्मिक क्रिसमस) को आठ घण्टे तक सामूहिक ध्यान और दूसरे दिन 25 दिसम्बर (सामाजिक क्रिसमस) को भोज का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष (सन् 1936) के उत्सव में भाग लेने और तीन विश्व यात्रियों के पुनः घर लौट आने पर स्वागत करने के लिए दूर-दूर से परम प्रिय मित्रों तथा छात्रों के आ जाने से काफी उत्साह आ गया था।

''बड़े दिन के भोज में पन्द्रह हजार मील से इस शुभ अवसर के लिए लाए गए पदार्थों का समावेश था। कश्मीर से गुच्छी, डिब्बाबन्द रसगुल्ला और आम का रस, पापड़ और आइसक्रीम को सुगन्धित करने के लिए केवड़ा-जल। सन्ध्या-समय हमलोग एक विशाल 'क्रिसमस वृक्ष' को घेर कर बैठ गए। निकटस्थ अग्निकुण्ड में साइप्रस की सुगन्धित लकड़ी जल रही थी और उसकी सुगन्ध हवा में फैल रही थी।

''उपहार-वितरण का समय आ गया! फिलिस्तीन, मिश्र, भारत, इंग्लैण्ड, फ्रान्स, इटली आदि विश्व के सुदूर देशों से लाई गई नाना प्रकार की वस्तुओं का उपहार! हर विदेशी जंक्शन पर श्री राइट ने ट्रंकों को यत्न के साथ गिन-गिन कर सम्भालने में कितना परिश्रम किया था, ताकि अमेरिका के प्रिय आत्मीय जनों के लिए खरीदी गई सौगातें किसी अन्य के हाथ न लग जाएँ! पुण्यभूमि फिलिस्तीन से पवित्र जैतून वृक्ष का धातुचित्र, बेल्जियम और हॉलैण्ड से सूक्ष्म कारीगरीयुक्त गोटे और जरी के वस्त्र, ईरान के गलीचे, बारीक बुनावट वाले कश्मीरी शाल, मैसूर से सतत सुगन्धवाली चन्दन की तश्तरियाँ, मध्यप्रान्त से 'शिव के नन्दी की आँख' के नाम से परिचित

कीमती पत्थर, दीर्घकाल पूर्व लुप्त भारतीय राजवंशों के सिक्के, रत्नखचित फूलदानियाँ और प्यालियाँ, सूक्ष्म चित्र, दीवार के चटकीले पर्दे और धूप, अगरबत्ती, अगरु चन्दन आदि, स्वदेशी छींट, लाख के काम की वस्तुएँ, मैसूर से हाथी-दाँत की नक्काशीवाली वस्तुएँ, ईरान से लम्बी नोकवाली जूतियाँ, प्राचीन सचित्र पाण्डुलिपियाँ, मखमल, कमरबाब, गांधी-टोपियाँ, मिट्टी के बर्तन, पटिया (Tiles), पीतल के बर्तन, प्रार्थना करने के लिए ऊनी आसन— तीन महाद्वीपों से संचित निधि!

''पेड़ के नीचे सुन्दर ढंग से बँधी गठरियों की एक विशाल ढेरी में से मैंने एक-एक करके गठरियाँ वितरित कीं।

....

''श्री डिकिन्सन!'' इस दूसरे पैकेट में रखा उपहार मैंने कलकत्ता में खरीदा था। उस समय मैंने सोचा था : ''श्री डिकिन्सन को यह बहुत पसन्द आएगा।''

मेरे एक प्रिय शिष्य श्री ई०ई० डिकिन्सन 1925 में माउण्ट वाशिंगटन केन्द्र की स्थापना के बाद से बड़े दिन के प्रत्येक उत्सव में उपस्थित रहते थे। इस ग्यारहवें उत्सव के समय वे मेरे सामने खड़े उस चौकोर बॉक्स के फीते खोलने लगे।

''चाँदी का गिलास!'' अपने संवेगों को थामते हुए उन्होंने मेरे उस उपहार को, जो पानी पीने का एक लम्बा गिलास था, एकटक देखा। वे कुछ दूरी पर जा बैठे। वे स्पष्ट रूप से विस्मय-विमुग्ध थे। सान्ता क्लॉज का कर्त्तव्य (उपहार देने का कार्य) पुनः प्रारम्भ करने से पूर्व उनकी ओर स्नेहभरी दृष्टि से देखते हुए मैं मुस्कुरा उठा।

सर्व दानों (उपहारों) के दाता भगवान् की प्रार्थना के साथ कलरव-मुखरित सान्ध्य उत्सव समाप्त हुआ। तत्पश्चात् क्रिसमस के आनन्द-गीतों का सामूहिक गान चलता रहा।

कुछ समय बाद श्री डिकिन्सन और मैं, दोनों बातें कर रहे थे।

''गुरु जी, चाँदी के गिलास के लिए आप मेरा हार्दिक धन्यवाद

स्वीकार करें। उस बड़े दिन की रात में आपको धन्यवाद देने के लिए मुझे शब्द नहीं मिल पाए थे।''

''मैं तुम्हारे लिए विशेष रूप से वह उपहार लाया था।''

''तैंतालीस वर्ष तक मैं उस रजत-पात्र के लिए प्रतीक्षा करता रहा हूँ! यह एक लम्बी कहानी है— ऐसी कहानी जिसे मैंने कभी किसी को नहीं बताया।'' श्री डिकिन्सन मेरी ओर सलज्ज भाव से देख रहे थे। उन्होंने कहा :

''आरम्भ नाटकीय था। मैं पानी में डूब रहा था। नेब्रास्का नामक छोटे-से शहर में मेरे बड़े भाई ने मुझे खेल-खेल में 15 फुट गहरे तालाब में ढकेल दिया था। उस समय मैं केवल पाँच वर्ष का था। मैं दुबारा पानी के नीचे डुबकी खाने ही वाला था कि हठात् एक बहुरंगी तीव्र प्रकाश प्रकट हो गया। सारा स्थान उससे भर गया। उस प्रकाश के बीच में एक मानवाकृति थी— प्रशान्त दृष्टि और अभय-प्रदायिनी हँसी! मेरा शरीर तीसरी बार पानी में डुबकी खाने लगा था। तभी मेरे भाई के एक साथी ने पास में खड़े एक वृक्ष की कोमल डाली को इस प्रकार नीचे झुका दिया कि वह मेरी पकड़ में आ गई। लड़कों ने मुझे पकड़ कर जल से निकाल लिया और किनारे पर रख कर प्राथमिक उपचार करके मुझे ठीक कर दिया।

''बारह वर्ष बाद, सत्रह वर्ष की आयु में मैं अपनी माँ के साथ शिकागो गया। यह 1893 ईसवी की घटना है। उस समय 'विश्व-धर्म संसद्' का महान् अधिवेशन चल रहा था। माँ के साथ मैं सड़क पर पैदल ही जा रहा था कि मुझे पुनः उसी प्रकार का प्रकाश दिखायी पड़ा। कुछ ही कदम दूर वही व्यक्ति आराम से टहलता दिखायी पड़ा, जिसका मैंने वर्षों पहले डूबते समय दर्शन किया था। वह व्यक्ति विशाल सभागृह के पास पहुँचते ही उसके दरवाजे में घुस कर अदृश्य हो गया।

''मैं चीख उठा : 'माँ, यह वही व्यक्ति है, जिसका मैंने पानी में डूबते समय दर्शन किया था।'

''माँ और मैं झटपट सभागृह में जा पहुँचे। उक्त व्यक्ति व्याख्यान-मंच पर बैठा हुआ था। हमें यह ज्ञात होते देर नहीं लगी कि वे भारत के स्वामी

विवेकानन्द हैं। उनकी वक्तृता अत्यन्त हृदयग्राही थी। उनका व्याख्यान समाप्त होने के बाद उनके साथ साक्षात्कार करने के लिए मैं आगे बढ़ा। उन्होंने मुझे देखकर इस तरह मधुर हास्य किया, मानो हम दोनों पुराने मित्र हों। उस समय मैं इतना छोटा था कि हृदय का भाव कैसे व्यक्त करूँ, यह ज्ञात नहीं था। पर मन ही मन मैं यह आशा सँजोए हुए था कि वे मेरे गुरु बनना अवश्य स्वीकार कर लेंगे। उन्होंने मेरे मनकी बात पढ़ ली।

''स्वामी विवेकानन्द ने अपनी सुन्दर और हृदयभेदी दृष्टि से मेरे नेत्रों में देखते हुए कहा : 'नहीं बेटा, मैं तुम्हारा गुरु नहीं हूँ। तुम्हारे गुरु बाद में आएँगे। वे तुम्हें चाँदी का एक गिलास देंगे।' इसके बाद उन्होंने तनिक रुक कर सहास्य कहा : 'उनमें तुमको उससे कहीं अधिक ज्ञानरूपी आशीर्वाद प्राप्त होगा, जितना वहन करने में तुम इस समय समर्थ हो'।''

श्री डिकिन्सन का कथन जारी रहा : ''चन्द दिनों के बाद ही मैं शिकागो से लौट आया। महान् विवेकानन्द का मैं पुनः दर्शन नहीं कर सका। किन्तु उनके द्वारा उच्चरित एक-एक शब्द मेरी अन्तश्चेतना के पट पर अमिट रूप से अंकित हो गया। वर्ष पर वर्ष बीतते गए, पर मेरे गुरु का आगमन नहीं हुआ। 1925 ईस्वी में एक दिन रात को मैंने हृदय से प्रार्थना की कि भगवान्, मेरे गुरु को मेरे पास भेज दो। कुछ ही घण्टों बाद संगीत का मधुर रव सुनकर मेरी नींद खुल गयी। बाँसुरी एवं अन्य वाद्यवृन्द के साथ स्वर्गीय देवदूतों का एक दल मेरे नेत्रों के समक्ष आविर्भूत हो गया। मधुर संगीत-लहरी से वायुमण्डल को गुञ्जित करके देवदूतों का दल धीरे-धीरे अदृश्य हो गया।

''दूसरे दिन सायंकाल पहली बार मैंने यहाँ लॉस ऐंजेल्स में आपका व्याख्यान सुना और तब मैं जान गया कि मेरी प्रार्थना स्वीकृत हो गई है।''

एक-दूसरे को देखते हुए हम दोनों ने मौन हास्य किया।

श्री डिकिन्सन ने कहा : ''गत ग्यारह वर्षों से मैं आपका 'क्रिया-योग' का शिष्य हूँ। कभी-कभी चाँदी के गिलास की बात सोच-सोच कर मुझे आश्चर्य भी होता था। मैंने अपने मन को समझा लिया था कि स्वामी विवेकानन्द के शब्द रूपक मात्र थे।

''किन्तु बड़े दिन की उस रात को जब 'क्रिसमस वृक्ष' के पास आपने मुझे वह छोटा-सा बॉक्स दिया, तब अपने जीवन में तीसरी बार मुझे उस तीव्र प्रकाश के पुनः दर्शन हुए। दूसरे ही क्षण मैं अपने गुरु के उस उपहार को देख रहा था, जिसे स्वामी विवेकानन्द ने तैंतालीस वर्ष पहले* ही देख लिया था— चाँदी का गिलास!''

[एक योगी की आत्मकथा— परमहंस योगानन्द में से साभार]

प्रस्तुति : डॉ० निर्मल मित्तल

---

* श्री डिकिन्सन स्वामी विवेकानन्द जी से सितम्बर 1893 में मिले थे— उसी वर्ष जब परमहंस योगानन्दजी ने जन्म लिया था (5 जनवरी)। विवेकानन्द जी इस बात से स्पष्टतया अवगत थे कि योगानन्दजी पुनः अवतरित हुए हैं और ये भारत की शाश्वत शिक्षा का प्रचार करने अमेरिका जाएँगे। — प्रकाशक

माँ ईश्वरदेवी गुप्ता अपने गुरु महाराज स्वामी नित्यात्मानंद जी के साथ

श्रीमती प्रवेश बजाज के कुछ संस्मरण

श्रीमती प्रवेश बजाज को अनेक वर्षों तक श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता एवं अपने गुरु स्वामी नित्यात्मानन्द के संग-लाभ का, स्वामी जी की सेवा का विशेषत: उनके अन्तिम समय में, 1974-75 में उनकी पञ्चभौतिक देह की सेवा-सुश्रूषा का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ठाकुर कहा करते : भक्त के सब पत्र पुराण। साधु भक्तों की चिट्ठी पढ़ने से ईश्वर का उद्दीपन होता है। सोचा, श्रीमती प्रवेश बजाज की बातों से कदाचित् हमें भी वैसा ही उद्दीपन हो, अत: उनसे मिलने की, उन्हें देखने की, उनसे कुछ बातें करने की उत्कण्ठा थी। अत: 16 अप्रैल, 2017; रविवार के दिन मैं और डॉ० नौबत श्रीमती प्रवेश बजाज से मिलने उनके चण्डीगढ़ के 11 सैक्टर स्थित निवास स्थान पर गए। समय प्रात: ग्यारह का।

वे विगत कुछ वर्षों से श्रीमत् स्वामी शिवसेवानन्दजी* द्वारा संचालित 'श्रीरामकृष्ण तपोवनम्' आश्रम में रह रही थीं। अभी कुछ महीने पहले वे अपनी बहू (रत्ना) व बेटा (राजीव) के आग्रह पर अपने उक्त चण्डीगढ़-निवास में रहने आई थीं।

लगभग एक महीना पहले श्री आशीष दास गुप्ता जी व उनकी पत्नी अनुराधा जी यहाँ निर्जनवास हेतु कलकत्ता से चण्डीगढ़ आए हुए थे अपने गुरु-गृह 579/18-बी में। एतदर्थ उन्होंने यहाँ प्राय: तीन मास एकान्त-वास किया। बंगला श्री म दर्शन के रिप्रिंट-कार्य में दोनों जन पूरी निष्ठा से जुटे हैं, प्रसन्न मन से। उन्होंने इच्छा प्रकट की— प्रवेश माता जी यहाँ चण्डीगढ़ में आई हुई हैं। उनसे मिलने की इच्छा है। इच्छा तो मेरी भी थी, नौबत भैया की भी। नौबत जी रोहतक से आए हुए थे यहाँ। हम दोनों का श्री म दर्शन भाग दो, तीन के रिप्रिंट का कार्य चल रहा था।

* श्रीरामकृष्ण मिशन आश्रम, चण्डीगढ़ के छात्रावास के पूर्व इंचार्ज स्वामी।

हम सभी ने 15 अप्रैल को मन बनाया, प्रोग्राम बनाया कि कल यानी 16 को प्रवेश जी के घर चलेंगे उनसे मिलने। फोन पर बात करके श्रीमती बजाज से दो दिन पहले ही तय कर लिया था कि रविवार को किसी समय आपसे मिलने आएँगे। फोन पर बात मेरी ही हुई थी। प्रोग्राम बन गया। पर 15 तारीख को अनुराधा जी के पैर में सूजन-दर्द। अत: वे दोनों साथ न आ पाए। मैं और नौबत भैया ही गए।

प्रवेश जी के बेटे राजीव हमें घर के बाहर ही मिल गए। वे ही हमें भीतर बैठक-कक्ष में ले गए। बहू रत्ना हमें मिलने आईं। कल मेरे हुए फोन से दोनों जान गए कि हम प्रवेश जी से मिलने आए हैं। थोड़ी ही देर में व्हील चेयर में एक सेविका उन्हें कक्ष में लाकर छोड़ गईं। रत्ना जी वहाँ थी हीं। नौबत जी ने और मैंने बारी-बारी से उन्हें प्रणाम किया। उन्होंने हमें पहचान लिया और हमें अपना प्यार-आशीर्वाद दिया।

प्रारम्भिक वार्तालाप से मुझे विश्वास हो गया कि इनसे कुछ बातें की जा सकती हैं, कुछ प्रश्न किए जा सकते हैं और प्रारम्भ हो गए मेरे प्रश्न, उनके उत्तर।

नौबत भैया के हाथ में मैंने अपने पर्स से निकाल कर एक नोट-बुक थमा दी। पेन उनके पास था ही। मेरे प्रश्न और प्रवेश जी के उत्तर वे सब नोट करते गए।

श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता को जगबन्धु महाराज (स्वामी नित्यात्मानन्द जी) 'मम्मी' कहा करते। सब भक्त भी उन्हें 'मम्मी' ही बुलाते।

स्वामी नित्यात्मानन्द जी को मम्मी— श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता प्रथम बार 1958 में मिली थीं, पहली बार उन्होंने स्वामी जी का प्रवचन सुना था टाण्डा उड़मुड़ में। प्रवचन के बाद कुछ प्रश्न भी किए थे उन्होंने महाराज से और उन्हें भरोसा हो गया था कि मेरी जिज्ञासाओं का समाधान यहाँ से हो सकता है। 1959 में वे पुन: इन स्वामी जी से मिलीं और 1960 से तो महाराज प्राय: श्रीमती गुप्ता व उनके पति प्रो० धर्मपाल गुप्ता के साथ ही रहे तथा उन्होंने 'गुप्ता-निवास' को ही श्री म ट्रस्ट का ऑफिस बना लिया। यूँ तो स्वामी जी देश भर में फैले अपने भक्तों के घरों में व तपस्या हेतु ऋषिकेश

रहते; पर वर्ष में 3-4 महीने गुप्ता-निवास में भी रहते। मैंने पूछा :

प्रश्न : महाराज ने 'मम्मी' में क्या देखा कि वे उनके घर ही रह गए।

उत्तर : मम्मी इतनी बड़ी शक्ति! कितना धैर्य उनमें! महाराज को विश्वास हो गया था कि उनके बंगला श्री म दर्शन का प्रकाशन व उसका हिन्दी-अनुवाद तथा प्रकाशन यहाँ से सम्पन्न हो सकता है। फिर महाराज में था इतना अहेतुक प्यार! शब्दों में नहीं बताया जा सकता। फिर मम्मी में इतना त्याग! बरसों सेवा की उन्होंने महाराज की [वे 1960 से 12 जुलाई, 1975 को उनके देहावसान तक प्राय: गुप्ता-परिवार के साथ ही रहे।] मम्मी ने पकाया, खिलाया, सेवा की; और सदा के लिए 'मम्मी' ने महाराज को पकड़ लिया।

''मुझे महाराज ने कहा था— देखो, तुम मम्मी का साथ कभी न छोड़ना। और हम भी कभी 'मम्मी' का हाथ छोड़ न पाए। आज भी मैं उन्हें पकड़े हूँ, उनका शरीर चले जाने के बाद भी। आज भी 'मम्मी' और महाराज मेरे साथ रहते हैं। 'ठाकुर' तो हैं ही। महाराज ने हमें 'ठाकुर' को पकड़वाया।''

प्रश्न : आप 'महाराज' के बारे में कुछ कहें।

उत्तर : वे बंगाल से आए हमारे उद्धार के लिए। कहाँ बंगाल, कहाँ यह जगह (चण्डीगढ़)! वे आए हमारे लिए।

प्रश्न : उनके संग का आपके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर : मुझे अन्दर में कोई तकलीफ़ नहीं। मन में कोई द्वन्द्व नहीं। कोई arguement नहीं। भीतर आनन्द की स्थिति है।

प्रश्न : इस आयु में शारीरिक विकार आ जाते हैं। उन्हें देख मन में कुछ होता है?

उत्तर : ऐसा तो कोई विकार लगता नहीं।

प्रश्न : मन में कुछ चलता हो?

उत्तर : ठाकुर-माँ के सिवाय कुछ नहीं। कोई पुरानी बातें नहीं। बस ठाकुर-माँ।

प्रश्न : आप वहाँ रहती हैं बहुत समय से सोलन-आश्रम में। अब आप यहाँ आई हुई हैं अपने घर में। तो क्या अब यहीं रहने की इच्छा है?

उत्तर : ना, वहीं रहने की इच्छा है। यहाँ इसलिए आई कि बच्चों को माँ का अभाव न लगे। बच्चों के मन में हो जाता है कि माँ हमारे पास रहे। तो थोड़ा आ गई।

प्रश्न : बच्चों के लिए आपके मन में क्या भाव आता है?

उत्तर : यही कि इस उम्र में मन में होता है मुझे दूसरे की help (सहायता) नहीं चाहिए। आज के बच्चे अपनी growth (विकास) ठीक से चाहते हैं। उन्हें कुछ कहना उनके काम में, उनकी growth में, बाधा देना है। वे तो यही सोचते हैं कि मैं जिस रास्ते पर जा रहा हूँ, वही ठीक है। हम भी तो जब इधर आए यानी महाराज जी से मिलते, वे हमारे यहाँ आते तो हमें भी कोई obstruction (बाधा) पसन्द नहीं थी।

प्रश्न : 'मम्मी' की कौन-सी बात याद आती है?

उत्तर : 'मम्मी' का कैसा रूप होता, उनके चेहरे पर कैसा तेज होता जब वे महाराज के साथ रहती थीं! वे कितने आनन्द में रहतीं, कैसे आनन्द में जीवन यापन करतीं! वह सब ध्यान में आता है। फिर उनका गुण था— बाँटना। अपने पास इकट्ठा करना नहीं, बाँटना।

प्रश्न : बाँटना माने क्या?

उत्तर : देना, और क्या?

''देखो, हमें गुरु मिले, जैसे हमारी पेन्शन लग गई। पेन्शन कितना बड़ा भरोसा होता है। ऐसे ही हमें जीवन का भरोसा मिला— समय पर जगना, समय पर सोना— सब स्वत: होता है। अपने-आप समय पर नींद आती है। उठाना भी किसी को नहीं पड़ता। अपने-आप उठ जाती हूँ। सब स्वत: हो रहा है।''

प्रश्न : अन्दर में कोई इच्छा शेष है?

उत्तर : कोई भी तो नहीं।

प्रश्न : आपने दीक्षा महाराज से ली?

उत्तर : हाँ, उन्होंने* कृपा की थी। पर अब तो मम्मी ने ही मुझे

---

* पूज्य महाराज ने 12 नवम्बर, 1969 को इन्हें मन्त्रदीक्षा दी थी।

पकड़ा हुआ है। वे ही अब भी, आज भी मेरे साथ चल रही हैं। महाराज ने मुझे कहा था— तुम मम्मी को मत छोड़ना। ये लोग (महाराज, साधु लोग) दूसरे का सब जीवन देख लेते हैं। साधु की आँखें सब देख लेती हैं।

घण्टा भर हो चला था। हमें लगा ये (प्रवेश जी) थक गई होंगी। हालाँकि उन्हें देख कर ऐसा कुछ भी लगा नहीं। तो भी उनसे विदा ली। सेविका उन्हें भीतर ले गई।

उनकी बहू रत्ना जी आईं। हमने उनसे विदा लेनी चाही। पर वह बोलीं— थोड़ा तो बैठो। मुझे बताओ माँ ने क्या कहा? उन्हें बताया। वह सुनकर प्रसन्न हुईं। बोलीं— ''हमारे लिए यह परम सौभाग्य की बात है कि वे यहाँ हैं और हमें उनकी सेवा का थोड़ा अवसर तो मिल रहा है।'' बोलीं— मैंने भी महाराज (स्वामी नित्यात्मानन्द जी) के दर्शन किए हैं। रोज़ गार्डन में उन्हें देखा है। यहाँ इसी कमरे में मैंने देखा कोई स्वामी बैठे हैं और अनेक भक्त सामने हैं और वे प्रवचन कर रहे हैं। बाहर प्राङ्गण में मैंने ठाकुर को और माँ को घूमते देखा है। मुझे तो मालूम नहीं माँ (माँ सारदा) कैसी दिखती थीं। पर मैंने उन्हें देखा और देखा कि माँ ठाकुर से थोड़ी लम्बी हैं। मैंने सोलन वाले महाराज (स्वामी शिवसेवानन्द जी) से बात की तो बोले— ऐसा ही था। तुमने ठीक देखा।''

मैंने कहा— आप भी धन्य हैं। आपने स्वामी जी के दर्शन किए और अब भी इन खुली आँखों से यहाँ, इस घर में उन्हें तथा ठाकुर-माँ को देख रही हैं। यह सब आपकी सेवा, अपनी सासू-माँ-सेवा का फल है।

प्रवेश जी ने मुझे बताया था— मम्मी के पास रहने से पहले महाराज यहाँ रहे थे, इसी घर में, साल भर रहे।'' पापा जी श्री धर्मपाल गुप्ता जी के सेवानिवृत्ति के पश्चात् पहली सितम्बर 1968 को रोहतक से चण्डीगढ़ आ जाने के बाद स्वामी नित्यात्मानन्द जी कुछ समय के लिए श्रीमती प्रवेश बजाज के यहाँ रहे थे और उनके बैठक-कक्ष में प्रवचन भी किया करते थे।

मैंने सोचा— महाराज रहते थे श्री म के साथ। श्री म से मिलीं उन्हें ठाकुर-माँ की बातें। तो एक तरह से वे सदा रहते ठाकुर-माँ के संग। तभी

इस घर में भी महाराज के साथ-साथ ठाकुर-माँ भी यहाँ विचरण करते हैं। रत्ना जी उन्हें अपनी खुली आँखों से यहाँ घूमते देखती हैं, निश्चय ही उन पर भी ठाकुर-कृपा है, माँ-कृपा है! वे भी सचमुच धन्य हैं।

रत्ना जी की सासू-माँ, प्रवेश जी ने महाराज की, महाराज के माध्यम से ठाकुर-माँ की सेवा की और रत्ना जी अपनी सासू-माँ की सेवा कर रही हैं। और रत्ना जी ने अपनी सासू-माँ की सेवा से सब लाभ ले लिया। वे धन्य!

साधु-सेवा, साधु-संग, सत्संग, यही है मनुष्य का कर्त्तव्य, ठाकुर कहते। इसी का सुफल प्रवेश बजाज जी के जीवन में, आगे उनकी बहू रत्ना जी के जीवन में स्पष्ट देखा।

जय ठाकुर-माँ!!

प्रस्तुति : डॉ० निर्मल मित्तल

श्री 'म' महोत्सव-2017

स्वामी नित्यात्मानन्द जी की शिष्या तथा श्री 'म' ट्रस्ट की वर्तमान अध्यक्षा श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता के मन में आया कि कुछ ऐसा किया जाए जिससे हमारे आज के युवा भी ठाकुर श्रीरामकृष्ण परमहंस की वाणी से लाभान्वित हों तथा वे भी ठाकुर के 'व्यास' श्री म तथा उनकी रचना 'कथामृत' के संग परिचय पा सकें। इस उद्देश्य से उन्होंने सोचा कि श्री म (मास्टर महाशय) की स्मृति में भाषण/पत्र-पठन आदि आयोजित हों। इसके लिए उन्होंने यहाँ के श्रीरामकृष्ण मिशन आश्रम के एक साधु के सुझाव पर वहाँ श्री म ट्रस्ट की ओर से सन् 1997 में एक लाख रुपए की धनराशि रख दी थी ताकि इसके ब्याज से मिशन आश्रम प्रति वर्ष मास्टर महाशय-स्मृति समारोह आयोजित कर सके। तदनुसार 24-25 अक्तूबर, 1998 को श्रीरामकृष्ण मिशन आश्रम, चण्डीगढ़ में यहाँ के तत्कालीन सचिव स्वामी पीताम्बरानन्द जी ने 'श्री म विशेषोत्सव' का आयोजन किया। तब से लेकर यह श्री 'म' महोत्सव प्रतिवर्ष चण्डीगढ़ मिशन आश्रम में मनाया जा रहा है।

19 नवम्बर, 2017

प्रातः आठ बजे से दोपहर एक बजे तक उत्सव रहा। वेद एवं स्तोत्र-पाठ, ध्यान, श्रीरामकृष्ण चालीसा, वचनामृत-पाठ, अष्टोत्तर नामार्चना के पश्चात् स्वामी मुक्तिदानन्द जी व स्वामी सर्वस्थानन्द जी के प्रवचन हुए।

उसमें से कुछ अंश प्रस्तुत हैं :

स्वामी मुक्तिदानन्द जी :

मास्टर महाशय ने ठाकुर की वाणी— दैवी वाणी संसार को दी 'कथामृत' के माध्यम से। वे थे व्यास ठाकुर के। जैसे गणेश जी ने वेद व्यास जी की रचना 'महाभारत' लिखी, वैसे ही मास्टर महाशय ने ठाकुर-वाणी लिखी। किसी भी अवतार की वाणी को पहली बार अधिकृत रूप से रखा श्री म ने 'कथामृत' में। कथामृत है historical record. ठाकुर की वाणी दिन, वार, तारीख सहित वर्णित है इसमें।

श्रीरामकृष्ण कहते हैं— मनुष्य-जीवन का एकमात्र उद्देश्य है, भगवान-लाभ। यह है voice of God. स्वयं कहा— जो राम, जो कृष्ण, वही हैं अब रामकृष्ण। भगवान ने स्वयं कहा, तभी विश्वास।* श्री म को बोला था— अब तुम यहीं आओगे। भगवान नारायण बने गदाधर। कैसी अद्‌भुत लीला!

कथामृत में है कैसे ठाकुर नाश करते हैं मास्टर का ego— He captures the ego of मास्टर। मास्टर इतने पढ़े-लिखे हैं, पर अध्यात्म ज्ञान का परिचय नहीं। सचमुच ज्ञान क्या है— ईश्वर को जानना ही है ज्ञान। — One who knows God is ज्ञानी. He may be a good teacher, a good engineer etc., but it is not called knowledge,ये सब जानकारियाँ हैं। संसार की प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशील है। जो शाश्वत है, वही सत्य है। श्रीरामकृष्ण ने यह पाठ पढ़ाया मास्टर को।

ठाकुर की भाषा देखें— कितनी सरल है। कोई पण्डिताई नहीं।

फिर बताया— गृहस्थ लोग भी आध्यात्मिक जीवन जीकर भगवान को पा सकते हैं।

श्री म की स्मृतिशक्ति— It is like a taperecorder, ध्रुव स्मृति। इसीलिए कथामृत है world में unique (विश्व में अद्वितीय).

ठाकुर का जो भी है, it is all based on experience. वे आए

---

* 'स्वयं चैव ब्रवीषि मे' —गीता 10:13

संशय-राक्षस का नाश करने। The glory and significance of Kathamrita is— we can live with Him (God) through this Kathamrita.

स्वामी सर्वस्थानन्द जी :

कथामृत वस्तुतः अमृत है— कथामृतम्— ठाकुर की समस्त कथा, समस्त वाणी ही अमृत है। इसी अमृतवाणी को कहने वाले ठाकुर श्रीरामकृष्ण-सागर के किनारे बैठकर श्री म यही वाणी अपने पास आने वाले जनों को वितरित करते, उसी अमृतमय सागर-जल की कुछ बूँदों से त्रिताप से तप्त जनों को शीतल करते।

स्वामी विज्ञानानन्द (श्रीरामकृष्ण मिशन आश्रम, बेलुड़ मठ के चतुर्थ-अध्यक्ष) जी ने कहा था, ''अधिकतर संन्यासी श्री म के मुख से ही ठाकुर जी का कथामृत-पान करके, उनसे प्रेरणा पाकर यहाँ मठ में आ रहे हैं।''

श्री म का अपना जीवन देखें— नौकरी, फिर गृहस्थ। गृहस्थ में भी नाना झंझट, परिस्थितियाँ ही ऐसी थीं। इतने व्यस्त जीवन में भी थोड़ा भी समय मिलते ही ठाकुर के पास चले आते। ठाकुर की वाणी सुनकर, ठाकुर का सान्निध्य पाकर उनके मन-प्राण शीतल होते। ठाकुर ने कहा है— संसार में रहते-रहते मन अशुद्ध हो जाता है, मलिन हो जाता है। मलिन मन को शुद्ध करने के लिए बीच-बीच में निर्जन में जाना चाहिए और विचार करना चाहिए कि यह संसार अनित्य है, नश्वर है, असत्य है। एकमात्र ईश्वर ही नित्य, सत् वस्तु है। इसलिए मने, बने, कोने सर्वदा सत्-असत् विचार करोगे। श्री म ने ऐसा ही किया। अवसर मिलते ही वे ठाकुर के पास पहुँच जाते।

ठाकुर की बातों को श्री म दिन, तारीख, वार, कौन-कौन उपस्थित हैं, आदि सब कुछ अपनी डायरी में लिख लेते। बीच-बीच में ठाकुर पूछते— बोलो, क्या लिखा है। फिर बताते— नहीं, ऐसा नहीं, ऐसा है। ठाकुर का शरीर चले जाने के बाद वे गहन ध्यान में डूब कर फिर अपने डायरी-notes से 'कथामृत' लिखते।

कहना न होगा कि Thakur is most original— ठाकुर एकदम मौलिक हैं। He went directly to Mother Nature. उन्होंने समस्त ज्ञान

'माँ' से पाया है। दिव्य शक्ति और व्याकुलता के माध्यम से उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया है। वे कहते— माँ राश ठेल देती हैं।

ठाकुर श्रीरामकृष्ण का सब ज्ञान है निज अनुभूति पर आधारित। उनके लिए religion is realisation. That is why it has direct appeal. ठाकुर का कहा सब सत्य है। सत्य के अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं।

कुछेक भक्तों ने भी इस अवसर पर अपनी-अपनी बात कही। उनकी बात उन्हीं के शब्दों में :

श्रीमती आशा गुप्ता

''कथामृत-पाठ हमें जिन्दा रखता है। कथामृत के पहले 16 पृष्ठ अवश्य पढ़ें। इससे हमें शिक्षा मिलती है कि हम संसार में कैसे रहें। हम ईश्वर की शक्ति से ही चल रहे हैं। एक पतीले में आलू-परवल उबल रहे हैं। नीचे आँच-जलती लकड़ी खींच लो तो उबलना झट बन्द। ऐसे ही हम हैं। हमें ईश्वर की शक्ति ही चला रही है।

कथामृत में ठाकुर हमें बता रहे हैं : ''अनासक्त होकर अपना काम करो।'' ठाकुर के पास अनेक जन आते हैं। ठाकुर उन्हें अलग-अलग प्रकार से समझा रहे हैं। हम अपना मिला लें, हमें कौन-सा तरीका अपनाना है, हमारे लिए क्या ठीक है। इसमें सभी के लिए encouragement है। कथामृत में बताए मार्ग पर चलकर हम जीवन अच्छे ढंग से बिता सकते हैं। सभी शास्त्रों का सार कथामृत में है। हम ठाकुर के बालक हैं। We are really blessed. (हम वस्तुतः धन्य हैं।)

श्रीमती मंजु तलवार :

हम श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता (श्री 'म' ट्रस्ट की द्वितीय प्रधान) के आभारी हैं, जिनकी वजह से हम प्रतिवर्ष श्री 'म' उत्सव मनाते हैं। 'कथामृत' (वचनामृत) में श्री म ने ठाकुर श्रीरामकृष्ण का जीवन्त चित्र हमारे समक्ष रख दिया है। इसे बार-बार पढ़ने से रस आता है। इसे पढ़कर ज्ञान प्राप्त होता है

कि माँ-बाप, पति-पत्नी आदि सभी सांसारिक रिश्ते हमारे बस इसी जन्म के हैं, सदा-सदा के लिए तो भगवान ही हमारे अपने हैं। कथामृत हमें यह भी सिखाता है कि साधुसंग का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। हमें अपनी सभी जिज्ञासाओं का समाधान साधु से ही मिलता है।

श्री ओम प्रकाश :

आज का दिन इतना शुभ है। ठाकुर-माँ की कृपा से वही धारा आज भी श्री म के माध्यम से हम तक पहुँच रही है। श्री म हम गृहस्थों को represent करते हैं। हमें जीवन में हर समय guidance चाहिए, solace चाहिए, assurance चाहिए। इसके लिए हम बैठ सकते हैं मास्टर महाशय के पास, कथामृत के पास। हमें अपने जीवन के लिए जो direction चाहिए, वह direction है कथामृत में। हम इसका प्रतिदिन पाठ करें। इससे हमारी बैटरी charge रहेगी। इसे पढ़ते-पढ़ते और कथामृत में लिखी ठाकुर-वाणी का पालन करते-करते we can feel the divinity inside us. (हम अपने अन्तर की दिव्यता को जान सकते हैं।)

श्री कृष्णकान्त अरोड़ा

श्रीरामकृष्ण कथामृत (वचनामृत)— इस पुस्तक का existence में आना आसान बात नहीं। माँ सारदा ने श्री म के मुख से ठाकुर-वाणी सुनकर कहा था, 'तुम जो कह रहे हो, वह अक्षरशः ठीक है, इसे प्रकाश में लाओ।' इस कथामृत से हमारा आत्म-विकास सम्भव है— it is instrumental. इसमें सभी बातें इतनी सरलता से कही गई हैं। It is spirituality made easy. (यह आध्यात्मिकता की कुञ्जी है।) कथामृत का नया नाम यही होना चाहिए— Spirituality made easy.

—प्रस्तुति : डॉ० निर्मल मित्तल

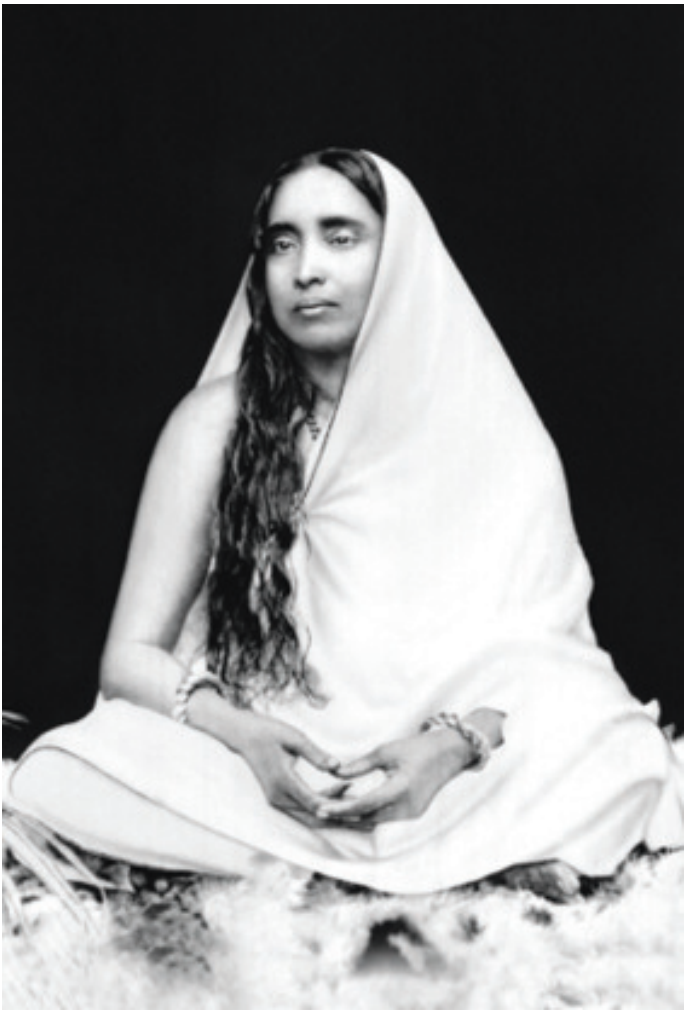

माँ सारदा
(1853 – 1920)

श्री 'म' ट्रस्ट के प्रकाशन

1. श्री 'म' दर्शन

बंगला संस्करण— भाग 1 से 16— स्वामी नित्यात्मानन्द

श्री 'म' दर्शन महाकाव्य में ठाकुर, माँ सारदा, स्वामी विवेकानन्द तथा अन्यान्य संन्यासी एवं गृही भक्तों के विषय में नूतन वार्त्ताएँ हैं। और इसमें है कथामृतकार श्री 'म' द्वारा 'कथामृत' के भाष्य के साथ-साथ उपनिषद्, गीता, चण्डी, पुराण, तन्त्र, बाइबल, कुरान आदि की अभिनव सरल व्याख्या।

2. श्री 'म' दर्शन

हिन्दी संस्करण— भाग 1 से 16

श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता द्वारा बंगला से यथावत् हिन्दी-अनुवाद।

3. श्री 'म' दर्शन

अंग्रेज़ी संस्करण— ('M.'— The Apostle and the Evangelist)

श्री 'म' दर्शन ग्रन्थमाला का अंग्रेज़ी-अनुवाद प्रोफेसर धर्मपाल गुप्ता ने 'M.'— The Apostle and the Evangelist नाम से किया है। ट्रस्ट के पास प्रथम तेरहवाँ एवं पन्द्रहवाँ भाग उपलब्ध हैं। शेष चौदह एवं सोलह अभी मुद्रण-प्रकाशन-प्रक्रिया में हैं।

4. Sri Sri Ramakrishna Kathamrita Centenary Memorial

प्रोफेसर धर्मपाल गुप्ता और पद्मश्री श्री डी०के० सेनगुप्ता द्वारा अंग्रेज़ी में सम्पादित बृहद् ग्रन्थ, जिसमें ठाकुर श्रीरामकृष्ण, 'कथामृत', श्री 'म' और 'श्री म दर्शन' पर श्रीरामकृष्ण मिशन के संन्यासियों समेत अनेक गणमान्य विद्वानों के शोधपूर्ण लेख हैं।

5. A Short Life of Sri 'M.'

स्वामी नित्यात्मानन्द जी महाराज के मन्त्र-शिष्य और श्री 'म' ट्रस्ट के भूतपूर्व सचिव, प्रोफेसर धर्मपाल गुप्ता द्वारा अंग्रेज़ी में लिखी गई श्री 'म' की संक्षिप्त जीवनी।

6. **Life of M. and Sri Sri Ramakrishna Kathamrita**

प्रोफेसर धर्मपाल गुप्ता द्वारा लिखित श्री 'म' के जीवन तथा 'कथामृत' पर शोध प्रबन्ध।

7. **श्री श्री रामकृष्ण कथामृत (हिन्दी संस्करण— भाग 1 से 5)**

श्री महेन्द्रनाथ गुप्त (श्री म) ने ठाकुर रामकृष्ण परमहंस के श्रीमुख-कथित चरितामृत को अवलम्बन करके ठाकुरबाड़ी (कथामृत भवन), कोलकता-700 006 से 'श्री श्री रामकृष्ण कथामृत' का (बंगला में) पाँच भागों में प्रणयन एवं प्रकाशन किया था। इनका बंगला से यथावत् हिन्दी अनुवाद करने में श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता ने भाषा-भाव-शैली— सभी को ऐसे सरल और सहज रूप में संजोया है कि अनुवाद होते हुए भी यह ग्रन्थमाला मूल बंगला का रसास्वादन कराती है।

8. **Sri Sri Ramakrishna Kathamrita (English Edition)**

श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता के हिन्दी-अनुवाद से प्रोफेसर धर्मपाल गुप्ता द्वारा कथामृत का अंग्रेज़ी-अनुवाद। सभी पाँचों भाग प्रकाशित।

9. **नूपुर (वार्षिक स्मारिका)**

श्री म ट्रस्ट के संस्थापक और हम सब के पूजनीय गुरु महाराज स्वामी नित्यात्मानन्द जी के 101वें जन्मदिन पर उनकी स्मृति में 'नूपुर' नाम से सन् 1994 ईसवी में इस स्मारिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ था। उसी स्मारिका ने अब वार्षिक पत्रिका का रूप ले लिया है, जिसमें अन्य बातों के अतिरिक्त ठाकुर रामकृष्ण परमहंस, माँ सारदा, श्री म, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी नित्यात्मानन्द, 'श्री म दर्शन' आदि के बारे में प्रचुर सामग्री रहती है। साथ ही 'कथामृत'कार श्री 'म' के द्वारा 'श्री 'म' दर्शन' में कही उन बातों को भी प्रकाश में लाया जाता है, जो 'श्री श्री रामकृष्ण कथामृत' में नहीं हैं।

10. **लाइयाँ ते तोड़ निभाइयाँ (स्मारिका)**

श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता के 100वें जन्मदिवस पर सन् 2015 में यह स्मारिका प्रकाश में आई।

❖